डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 19 | अंक 63 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | रविवार 15 दिसम्बर 2024 | मूल्य 2 रुपया

आज भी कोल्ड डे का अलर्ट

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। पहाड़ों पर बर्फबारी और सर्द हवाओं के असर से कड़ाके की ठंड पड़ रही है। अंचल में आज रविवार को भी सर्द हवाओं के साथ भी कोल्ड डे का अलर्ट है। शनिवार सुबह न्यूनतम तापमान 6.8 डिग्री तक पहुंच गया। इस सीजन में यह अब तक का सबसे कम तापमान है, वहीं अधिकतम 24 डिग्री के आसपास बना हुआ है। अगले दो दिन और ऐसा ही मौसम बना रहेगा इसके बाद 16 दिसम्बर से तापमान में हल्का उछाल आएगा। इससे कड़ाके की ठंड से थोड़ी राहत मिलेगी। सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया उत्तर भारत में बर्फबारी होने से सर्द हवाएं प्रदेश में आ रही हैं। इस वजह से ज्यादातर हिस्सों में कड़ाके की ठंड पड़ रही है। पश्चिम-उत्तर भारत में 12.6 किमी की ऊंचाई पर 296 किमी प्रतिघंटा की गति से सब ट्रॉपिकल जेट स्ट्रीम हवाएं बह रही हैं। पहले यह रफ्तार 278 किमी प्रतिघंटा थी। हवा की ऊंचाई कम होने पर ठंड का असर और भी बढ़ जाएगा। उत्तरी हिस्से में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव है। इस वजह से बर्फ पिघल रही है, जिससे हवा में ठंडक है।

कई पुलिस वाले इधर से उधर

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। पुलिस कप्तान श्री अभिषेक आनंद ने एक दर्जन प्रधान आरक्षको और आरक्षकों को इधर से उधर किया है।

आदेश के अनुसार प्रआ भूपेंद्रसिंह को पुलिस लाईन से पिपलियामंडी थाना, ओमप्रकाश प्रजापत को दलौदा थाने से पुलिस लाईन, सुनील तोमर को भावगढ थाने से पुलिस लाईन भेजा गया है। आरक्षक मनीष शर्मा को कोतवाली से पुलिस लाईन, सेराज खान को अफजलपुर से पुलिस लाईन, घनश्याम पाटीदार को सुवासरा थाने से पुलिस लाईन, विक्रमसिंह को सीतामऊथाने से पुलिस लाईन, गोविंद हाडा को पुलिस लाईन से सुवासरा थाना, देवकिशन डांगी को पुलिस लाईन से सुवासरा, माया मालवीय को पुलिस लाईन से सुवासरा थाना, कुश कैथवास को पुलिस लाईन से गरोठ थाना, राहुल गुर्जर को पुलिस लाईन से गरोठ थाना और अनिल गुर्जर को पुलिस लाईन से चंदवासा चौकी स्थानांतरित किया गया है।

रजिस्ट्री में लोकेशन का तनाव..!

मेपिंग की गड़बड़ी कर रही परेशान

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। रजिस्ट्री कराने में फिलहाल कई परेशानियो का सामना लोगों को करना पड़ रहा है। इसमें एक है लोकेशन। संपदा 2.0 पोर्टल के माध्यम से रजिस्ट्रियां शुरू करने से पहले प्रदेशभर में मैप आईटी विभाग ने प्रॉपर्टी की लोकेशन मैपिंग का काम किया। उसी में प्रॉपर्टी की वास्तविक लोकेशन दर्ज नहीं होने से अब सेल डीड के पहले प्रॉपर्टी की जियो टैग आईडी बनाने में दिक्कत हो रही हैं। इससे रजिस्ट्रियां अटक रही हैं। दरअसल मैपिंग करते वक्त गूगल लोकेशन का इस्तेमाल किया जो करीब 200 मीटर सर्कल को कवर करती है। ऐसे में कौने के भूखंड या उस सर्कल के किनारे वाली प्रॉपर्टी या तो इधर या उधर दर्शा रही है। यदि मैपिंग के वक्त लोकेशन एरिया सीमित रखते हुए जितनी प्रॉपर्टी जहां है, उतनी ही मैपिंग करते तो यह समस्या पैदा नहीं होती। इसके लिए ग्राम पंचायत, नगर निकाय और रेवेन्यू डिपार्टमेंट के डाटा से वेरिफिकेशन करना पड़ता। लेकिन यह लंबी प्रोसेस थी। इसलिए जल्दबाजी में गलत मैपिंग हो गई है।

पोर्टल अपडेशन का काम शुरु...

रजिस्ट्रेशन एंड स्टाम्प्स कमर्शियल टैक्स डिपार्टमेंट द्वारा संपदा 2.0 के माध्यम से प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री (खरीदी-बिक्री व बंधक अनुबंध) की जा रही है। जैसे-जैसे संपदा 2.0 पोर्टल में खामियां दिख रहीं है, उन्हें स्टेप बाय स्टेप दूर भी किया जा रहा है। बता दें कि प्रॉपर्टी की लोकेशन मैपिंग वाली ये गड़बड़ी प्रदेश स्तरीय है। सिर्फ मंदसौर ही नहीं दूसरे जिलों व ब्लॉक में भी दिक्कत आ रही है। अब विभाग प्लानिंग कर रहा है कि मैपिंग एडिट का ऑप्शन रजिस्ट्रार और सब रजिस्ट्रार स्तर पर ही उपलब्ध करवा दे। इसके लिए पोर्टल अपडेशन का काम शुरू हो गया है।

सुधार सीधे भोपाल से...

अभी भी मैपिंग एडिट का ऑप्शन है। लेकिन, ये सिर्फ भोपाल स्तर पर है। यदि मंदसौर या अन्य कहीं पर प्रॉपर्टी की लोकेशन गलत मैप हो गई तो संबंधित रजिस्ट्रार को टिकट जनरेट कर शिकायत भोपाल भेजना होगी। वहीं से प्रॉपर्टी की लोकेशन सही होगी तथा उसके बाद सही रजिस्ट्री करना संभव है। ये प्रोसेस थोड़ी लंबी है। इस चक्कर में क्रेता-विक्रेता को ज्यादा दौड़-भाग करना पड़ रही है। जैसे रजिस्ट्री से पहले क्रेता या विक्रेता को संबंधित प्रॉपर्टी पर जाकर वहां अपने फोटो के साथ प्रॉपर्टी जियो टैग आईडी बनाना पड़ती है। इसी में लोकेशन गलत आने पर इसे सुधरवाने के लिए रजिस्ट्रार ऑफिस जाना पड़ता है। वे ऑनलाइन भोपाल रिक्वेस्ट भेजेंगे तथा वहां सुधार के बाद दोबारा से सही लोकेशन वाली प्रॉपर्टी जियो टैग आईडी बनाना पड़ रही है। यदि विभाग सत्यापन करके मैपिंग सही कर दे तो समस्या नहीं होगी।

यहां हुई परेशानी...

कई प्रॉपर्टी सम्मिलित खाते की होती है। जैसे किसी भूखंड में 5 मालिक के नाम दर्ज हैं। लेकिन, नगरपालिका या राजस्व विभाग ने उन पांचों के हिस्से अलग-अलग करके उन्हें अलग-अलग मैप नहीं किया। ऐसे में संपदा 2.0 पर रजिस्ट्री करते वक्त सही लोकेशन नहीं ले पा रहे और कोई व्यक्ति अपना हिस्सा बेचना चाहे तो नहीं बेच पा रहा है। क्योंकि उसका हिस्सा कौन-सा है, तय नहीं होने से पोर्टल भी रिजेक्ट कर रहा है। ये संपत्ति परिमार्जन की चूक है।

आधार व बायोमेट्रिक की भी है परेशानी...

संपदा 2.0 में सारी रजिस्ट्रियों के लिए आधार और बायोमेट्रिक अनिवार्य है। ऐसे में जिन लोगों के आधार अपडेट नहीं हैं और बायोमेट्रिक मिलान नहीं हो रहा है, उनकी रजिस्ट्रियां भी नहीं हो रही हैं। लोग अपने बायोमेट्रिक अपडेट करवाते हुए आधार को अपडेट करवाएं। हालांकि, नई चुनौती बुजुर्ग लोगों के लिए है। जिनके बायोमेट्रिक ही सिस्टम अपडेट नहीं कर रहा है। ना तो थम्ब इंप्रेशन आ रहा है और ना आंख का रेटिना स्कैन हो रहा। ऐसे लोगों के लिए अभी विभाग ने कोई विकल्प नहीं खोजा है। जावरा-मंदसौर में ऐसी एक-दो रजिस्ट्रियां पिछले दिनो रुक गई हैं।

ठिठुरन भरी रात में पुलिस ने बहाया पसीना

वारंटियों की धरपकड़, सैकड़ों नोटिस थमाए

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। शुक्र वार-शनिवार की दरमियानी रात जहां आमजन ठिठुरन के चलते कंबल ओढ़ कर सो रहे थे। उस दौरान जिला पुलिस ने रातभर पसीना बहाया और करीब पौने तीनसौ वारंटियो की धरपकड़ की तथा सैकड़ो नोटिस थमाए। यह कार्रवाई पुलिस ने कॉम्बिंग गश्त में की। लगभग पचास पुलिस टीमों में पांच सौ से अधिक पुलिस अधिकारी, कर्मचारी कडाके की ठंड में अपराधियों को तलाशते नजर आए।

कॉम्बिंग गश्त के दौरान कुल 289 वारंटियों को धरदबोचा। जिनमें 154 स्थायी वारंटी एवं 86 गिरफ्तारी वारंटी शामिल है। इस कार्यवाही में 350 लोक अदालत के नोटिस, भरण पोषण, 138 एनआई एक्ट, विद्युत अधिनियम समेत 400 से अधिक अन्य नोटिस भी तामिल करवाये गये। इसी तरह से हिस्ट्रीशीटर/गुंडा, बदमाशों की चेकिंग करते कुल 76 निगरानी बदमाशों को चेक किया एवं 95 गुंडा/बदमाशों, 05 सजायाब बदमाशों को चेक करते कुल 176 हिस्ट्रीशीटर/गुंडा बदमाशों/जिलाबदर बदमाशों की चैकिंग की गई। पुलिस द्वारा अवैध शराब के कुल 11 प्रकरणों में 11 आरोपियों को गिरफ्तार कर आरोपियों के कब्जे से कुल 65.2 लीटर कुल कीमती 13 हजार 752 रू की अवैध शराब जब्त की गई। कॉम्बिंग गश्त के दौरान मंदसौर पुलिस द्वारा धारा 151 के अंतर्गत 08 प्रकरणों में 11 आरोपियों के विरूद्ध कार्यवाही की गई।

इन थानों की पुलिस ने पकड़े वारंटी...

पुलिस ने कुल 154 स्थायी वारंटी गिरफ्तार किये। जिनमें थाना कोतवाली ने 17, थाना वायडी नगर-22, थाना नई आबादी-04, थाना भावगढ़ 08, थाना दलौदा 08, थाना नाहरगढ-12, थाना अफजलपुर-02, थाना पिपलियामंडी- 11, थाना नारायणगढ- 24, थाना मल्हारगढ-05, थाना सीतामऊ- 17, थाना सुवासरा - 10, थाना शामगढ- 09, थाना गरोठ- 04, थाना भानपुरा द्वारा-01 वारंट तामिल किया गया। इसी प्रकार जिले में कार्यवाही के दौरान कुल 86 गिरफ्तारी वारंटियों की भी धरपकड की गई। इसमें थाना कोतवाली- 08, थाना वायडी नगर- 08, थाना नई आबादी- 04, थाना भावगढ- 06, थाना अफजलपुर- 06, थाना नाहरगढ- 01, थाना दलौदा 06, थाना पिपलियामंडी 08, थाना नारायणगढ-01, थाना मल्हारगढ- 05, थाना सीतामउ- 03, थाना सुवासरा 01, थाना शामगढ- 02, थाना गरोठ- 08, थाना भानपुरा-17, थाना गांधीसागर-02 के द्वारा कार्यवाही की गई।

एक्सपायरी डेट नहीं लिखने पर खाद्य पदार्थ जप्त

नीमच, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। शहर के ग्वालटोली क्षेत्र में शुक्रवार रात को खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने बड़ी कार्रवाई की। खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने यहां स्थित महाकाल फूड इंडस्ट्रीज पर छापा मारा और वहां से कुरकुरे, चिप्स आदि खाद्य सामग्री के नमूने लिए। इसके अलावा पैकिंग किए गए एक्सपायरी डेट न लिखे होने वाले खाद्य पदार्थों को जब्त किया गया। बता दें कि यह कार्रवाई एक जागरूक नागरिक की शिकायत के बाद की गई, जिसमें बताया गया था कि ग्वालटोली क्षेत्र में स्थित इस फैक्ट्री में कुरकुरे बनाकर बिना एक्सपायरी डेट लिख पाऊच पैकिंग किए जा रहे हैं। शिकायत के बाद कलेक्टर के निर्देश पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी यशवंत शर्मा ने ग्वालटोली के बंगाली कॉलोनी में स्थित महाकाल फूड पर यह कार्रवाई की। मौके पर खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने कुरकुरे, फिंगर और चिप्स सहित अलग-अलग प्रकार के 10 प्रोडक्ट के सैंपल लिए। इन नमूनों को जांच के लिए लैब भेजा जाएगा। इसके अलावा, पैकिंग और एक्सपायरी डेट न होने के कारण प्रकरण बनाकर न्यायालय में पेश किया जाएगा, जहां से आदेश आने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल, बड़ी मात्रा में कुरकुरे और अन्य खाद्य सामग्री को जब्त कर लिया गया है।

कहां जा रहा रामघाट से पानी..!- मंदसौर शहर के रामघाट बांध पर अभी कुछ दिन पूर्व ही दस फीट पानी कालाभाटा डैम से लिया गया था। वर्तमान में ठंड का मौसम है, इस समय पानी की खपत कम होना चाहिए, बावजूद इसके पानी की खपत अधिक होने से शनिवार को रामघाट बांध का जल स्तर पांच फीट से भी नीचे पहुंच गया है। अब कयास यह लगाया जा रहा है कि या तो पानी की खपत अधिक हो रही या पानी की चोरी रोकने में नपा नाकाम हो रही है।

सरवानिया में बाईक भिड़ी, मंदसौर के युवक की मौत, एक घायल

नीमच, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। जिले के जावद थाने की सरवानिवा महाराज पुलिस चौकी क्षेत्र के नीमच-सिंगोली मार्ग स्थित पेट्रोल पंप के सामने शनिवार सुबह 11 से 12 बजे के बीच दो बाइक आपस में भिड़ गई। इस हादसे में एक युवक की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार लखन पिता लक्ष्मीनारायण भील उम्र 20 साल निवासी ग्राम बिलात्री तहसील सीतामऊ जिला मंदसौर अपनी छोटी बहन किरण उम्र 6 वर्ष के साथ बाइक से सिंगोली तहसील के झांतला गांव से वापस अपने घर जा रहा था। इस दौरान सरवानिया महाराज में इंडियन पेट्रोल पंप के पास भूसे से भरे ट्रैक्टर-ट्राली को ओवरटेक करते समय वह सामने से आ रही बाइक से टकरा गया। इससे पास से गुजर रहा ट्रैक्टर-ट्राली लखन के ऊपर से निकल गया। जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। वहीं दूसरी बाइक सवार सरवानिया महाराज निवासी शिक्षक मनीष पिता मधुरालाल मंडोरिया उम्र 26 वर्ष घायल हो गया है। जिसका इलाज नीमच के बड़े अस्पताल में चल रहा है।

ट्रैक्टर-ट्रॉली और दोनो बाइक थाने ले गए...

सरवानिया महाराज पुलिस चौकी के प्रभारी असलम पठान ने कहा कि पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। दोनों बाइक और ट्रैक्टर-ट्राली को चौकी पर खड़ा किया गया है। अभी तक किसी पक्ष की कोई ओर से शिकायत नहीं आई है। आगे नियम अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

स्वास्थ्य विभाग ने जारी की एडवायजरी...

सर्दी में शराब से नुकसान, जान को भी खतरा

इंदौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सर्दी के तीखे तेवर और शीतलहर को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने अस्पतालों को अलर्ट जारी करने के साथ एडवायजरी जारी की है। सलाह दी गई है कि इस दौरान अनावश्यक घर से बाहर नहीं निकले। शराब का सेवन न करें। क्योंकि, यह शरीर के तापमान को घटाता है और रक्त धमनियों में संकुचन करता है।

कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. किसलय श्रीवास्तव का कहना है कि ठंड और पल्यूशन से ब्लड प्रेशर के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इस समय हार्ट अटैक के मामलों में भी बढ़ोतरी देखी जा रही है। खासकर सुबह 3 से 5 बजे के बीच। क्योंकि, अचानक ठंड के संपर्क में आने से आर्टरी पर दबाव बढ़ता है और प्लाक टूटकर क्लॉट बना देता है, जिससे हार्ट अटैक की आशंका बढ़ जाती है। सर्दी में फॉग के समय हवा में मौजूद प्रदूषण के कणों का असर बढ जाता है। ठंड में हार्ट अटैक की संभावना गर्मियों की तुलना में दो से तीन गुना बढ जाती है।

ऐसे बचें शीतलहर से...

✻ मौसम संबंधी पूर्वानुमानों के प्रति जागरूक रहें। पूर्वानुमानों का पालन करें। ✻ उन्नी कपड़ों की कई परतें पहनकर सिर, गर्दन, हाथ और पैरों को ढकें। ✻ विटामिन सी युक्त फल और सब्जियां खाएं। ✻ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए गर्म तरल पदार्थों का सेवन करें। ✻ नाक बहना, नाक बंद होना, फ्लू और नाक से खून आने पर चिकित्सकीय सलाह लें। ✻ बंद कमरों में अंगीठी या फायर पॉट का उपयोग न करें।

ट्राली खरीदकर रुपए नहीं दिए, अमानत में खयानत का केस दर्ज

पिपलियामंडी, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। अमानत में खयानत के मामले में पुलिस ने केस दर्ज किया। शिवनारायण पिता शंभुलाल धाकड, निवासी खुंटी ने नाहरगढ थाने पर रिपोर्ट दर्ज कराई कि मैंने करीब दो-ढाई महिने पहले भीलवाडा के पास बिगोद अपने घर के लिये नई ट्रैक्टर की ट्राली 1,31,000/- रूपये में खरीदी थी। ट्राली हल्की होने से मैंने उसको बेचने के लिये नाहरगढ में रजनीश पैट्रोल पम्प पर खडी की थी। मेरे परिचित फय्युम उर्फ चिम्पी पिता फारूख मेव निवासी नाहरगढ को ट्राली की जरूरत होने से हम दोनों के बीच में दिनांक 25 अक्टूबर 2024 को ट्राली का सौदा 1,31,000/- रूपये में हुआ था। जिसकी... **शेष पेज 4 पर**

ऑनलाइन गेमिंग से ठगने वाली गैंग के लिए काम करने वाले दलौदा के सात ठगोरे इंदौर में धराए, एक बिहारी भी पकड़ाया

इंदौर क्राइम ब्रांच की कार्यवाही

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। ऑनलाइन गेमिंग के माध्यम से लोगों को ठगने वाली मंदसौर की एक संगठित गैंग का पर्दाफाश करते हुए क्राइम ब्रांच इंदौर पुलिस ने 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस गैंग के सरगना तक पहुंचने की कोशिश पुलिस कर रही है। यह गैंग रॉक एक्सचेंज नामक वेबसाइट के माध्यम से करोड़ों रुपये की ऑनलाइन गैंबलिंग करवा रही थी। आरोपियों ने गेमिंग वेबसाइट में ऐसा अल्गोरिथम बनाया था कि इसमें सट्टा खेलने वाले के जीतने की संभावना बेहद कम हो जाती थी। यह गैंग नाबालिग बच्चों और युवाओं को जल्दी अमीर बनने का लालच देकर ऑनलाइन गैंबलिंग के जाल में फंसाता था। फर्जी सिम कार्ड और फर्जी बैंक खातों के माध्यम से इस ठगी को अंजाम दिया जा रहा था। आरोपी विभिन्न वेबसाइटस जैसे रॉक7.आर्ट, रॉकबुक9.कॉम आदि के माध्यम से ऑनलाइन गैंबलिंग संचालित करते थे। सट्टा खेलने वाले से रकम जमा कराकर उन्हें गेमिंग आईडी और पाईंट दिए जाते थे। गेमिंग वेबसाइट की कोडिंग इस तरह की गई थी कि शुरू में जीत का लालच देकर अंतत: गेम खेलने वाले को हार का सामना करना पड़ता था।

क्राइम ब्रांच इंदौर को सूचना मिली थी कि मानवता नगर स्थित मकान नंबर 170-ए में 7-8 लोग लैपटॉप और मोबाइल के जरिये ऑनलाइन सट्टा संचालित कर रहे हैं। पुलिस ने मौके पर दबिश देकर 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया। टीम ने परिक्षीत लोहार पिता रमेशचंद लोहार उम्र 26 वर्ष निवासी ग्राम दलौदा तहसील दलौदा जिला मंदसौर, रोशन लालवानी पिता विनोद लालवानी उम्र 20 वर्ष निवासी ग्राम दलौदा तहसील दलौदा जिला मंदसौर, विजय विश्वकर्मा पिता राजेन्द्र विश्वकर्मा उम्र 22 वर्ष निवासी सेमलियाहिरा दलौदा मंदसौर, अभिषेक यादव पिता चैनराम यादव उम्र 26 वर्ष निवासी ग्राम दलौदा तहसील दलौदा जिला मंदसौर, रुचित पिता राजन सिंह उम्र 25 वर्ष निवासी गोपालगंज अमीरगंज बिहार, राजेश कोतक पिता नरेश कोतक उम्र 19 वर्ष निवासी ग्राम दलौदा तहसील दलौदा जिला मंदसौर, प्रफुल्ल पिता चन्द्रशेखर सोनी उम्र 29 वर्ष निवासी ग्राम दलौदा तहसील दलौदा जिला मंदसौर, महेन्द्र सिंह पिता भंवर सिंह उम्र 28 वर्ष निवासी ग्राम दलौदा तहसील दलौदा जिला मंदसौर को गिरफ्तार किया है।

आरोपियो के कब्जे से मोबाइल फोन, लैपटॉप, चेकबुक और पासबुक, करोड़ों रुपये का हिसाब-किताब, फर्जी खातों और अंतरराष्ट्रीय लिंक की जांच के दौरान आरोपियों के मोबाइल में दुबई मनी एक्सचेंज से जुड़े कुछ संदिग्ध नंबर भी मिले हैं। आरोपियों द्वारा जीत की रकम को बड़े अमाउंट में अपने मालिक तक पहुंचाने की जानकारी भी सामने आई है। क्राइम ब्रांच ने आरोपियों के विरुद्ध पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1976 और धारा 112 बीएनएस के तहत प्रकरण दर्ज किया है। आरोपियों का पुलिस रिमांड लेकर गैंग के अन्य सदस्यों और ठगी से जुड़े अन्य पहलुओं की गहराई से जांच की जा रही है।

प्रारंभिक पूछताछ में यह मिली जानकारी...

क्राइम ब्रांच के एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के बताई कि प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया है कि आरोपी वेबसाइट रॉक एक्सचेंज के अलग-अलग साईट रॉक7, आर्ट, अग, रॉकिंप्ले.कॉम, एडमिन.रॉकबुक9.कॉम, अग.रॉकेक्च111.कॉम, रॉकेक्च9.कॉम के माध्यम से लाइन (हार-जीत) के साथ सट्टा संचालित करते हैं। ऑनलाइन गेमिंग सट्टा संचालित करने के संबंध में वैध दस्तावेज भी उनके पास नहीं थे। वे लोग जिन व्यक्तियों को सट्टा लगाना रहता है, उसके पेमेंट अलग-अलग खातों में डलवाकर रॉक वेबसाइट की आईडी एवं पासवर्ड देते हैं।उस आईडी पर जितने रुपए उस व्यक्ति ने जमा किए हैं, उसके पाइंट उनको उस आईडी पर देते हैं। जिसके बाद वह व्यक्ति वेबसाइट में उपलब्ध (24✻7) गेम खोलकर हार-जीत का दाव लगाकर सट्टा खेलता है। टेलीग्राम ग्रुप पर आरोपियों ने आईडी ब्रांच 1401 बना रखी थी। जिन व्यक्तियों को सट्टा लगाना रहता है, उनसे अलग-अलग बैंक खातों में रुपए डलवाकर उतने ही रुपयों के पाइंट देकर उन लोगों को सट्टा खेलने के लिए देते। ये वेबसाइट से ग्राहकों को जीतने पर पाइंटों को ऐप से विड्रावल की अनुमति चाहता है तो उसको उसके खाते में रुपए डाल देते हैं। आरोपी लैपटाप, मोबाइल और अन्य लोगों के खातों का उपयोग कर इन वेबसाइट से लोगों को सट्टा खिलाकर पैसा कमाते हैं।

ऐसे करते थे फ्राड...

आरोपी ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइट रॉक एक्सचेंज से कम उम्र के नाबालिग बच्चों और युवाओं को लुभावने ऑफर देते थे। इसके जरिए वे सट्टा और ऑनलाइन गैंबलिंग के लिए प्रेरित करते और जल्दी पैसे कमाकर अमीर बनने की चाहत में इसकी लत लगवा देते हैं। ये लोग ऑनलाइन गेमिंग वेबसाइट व ऐप में ऐसी कोडिंग एवं अल्गोरिथम का उपयोग करते हैं कि पैसे लगाने वाले व्यक्ति का जीत का प्रतिशत बहुत कम कर दिया जाता है, जिसमें शुरू में कुछ जीत से लाभ होता है पर बाद में गेम खेलने वाले को लॉस ही होता है। इस प्रकार ये फ्रॉड को अंजाम देते हैं।

दुबई से जुड़े तार...

टीम को इनकी गेमिंग वेबसाइट में अलग-अलग प्रदेशों के संभवत: फर्जी बैंक अकाउंट नंबर भी मिले है। रोजाना ये जीते हुए पैसों का अमाउंट बड़ा होने पे अपने उम्रर के मालिक का भेज देते थे। आरोपियों द्वारा करोड़ो रुपए की ऑनलाइन गेम्बलिंग की जा रही है। आरोपियों के मोबाइल में दुबई मनी एक्सचेंज करने वाले लोगों के नंबर भी मिले हैं। आरोपियों के पास से 29 मोबाइल, 13 चेक बुक/पास बुक और 6 लैपटॉप, 12 हजार 770 रुपए जब्त हुए हैं। सभी 8 आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ धारा पब्लिक गैम्बलिंग एक्ट 1976 और धारा 112 बीएनएस में केस दर्ज किया है। आरोपियों का पुलिस रिमांड लेकर उनसे ओर भी जानकारी निकाली जा रही है।

विचार-मंथन

दोनों सत्रों में नहीं बन रही सहमति

जब भी संसद का सत्र शुरू होता है, सर्वदलीय बैठक बुला कर आपसी सहमति और सहयोग से कार्यवाही चलाने का संकल्प लिया जाता है। मगर, पिछले कुछ समय से संसद का कामकाज हंगामे की भेंट चढ़ जा रहा है। किसी मसले पर विपक्ष बहस की मांग करता है और सभापति की मंजूरी न मिल पाने के बाद हंगामे का सिलसिला चल पड़ता है। पूरा का पूरा सत्र बिना किसी सार्थक बहस और विधेयकों पर जरूरी चर्चा के बगैर समाप्त हो जाता है। चालू सत्र में भी पहले ही दिन से हंगामा चल रहा है। विपक्ष अडाणी मामले पर बहस कराना चाहता है, मगर दोनों सदनों में इसकी इजाजत नहीं मिल पा रही। अब स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि विपक्ष ने राज्यसभा के सभापति यानी उपराष्ट्रपति के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव रख दिया है। उसका कहना है कि सभापति विपक्ष को बोलने का मौका नहीं देते, वे अपनी मर्जी से बहसों को रेकार्ड में लेते या नहीं लेते हैं। सत्तापक्ष के लोगों को बोलने का अधिक अवसर देते हैं, आदि। यह बहत्तर वर्षों के संसदीय इतिहास में पहला मौका है, जब इस तरह राज्यसभा के सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है, उन्हें हटाने की मांग उठी है। ऐसा नहीं कि पहले विपक्ष के नेता किसी सदन के सभापति से असंतुष्ट नहीं होते थे। उन पर पक्षपात के आरोप नहीं लगाते थे। पहले भी ऐसा होता रहा है, मगर तब कटाक्ष, तल्ख बयान और बहसों के बाद मामले सुलझा लिए जाते थे। सदन की मर्यादा का निर्वाह किया जाता था। मगर पिछले कुछ समय से शायद इस तकाजे को कोई समझना नहीं चाहता। मानसून सत्र में विपक्षी दल के कई नेताओं ने लोकसभा अध्यक्ष को संसदीय मर्यादा और उनके पद की गरिमा का पाठ पढ़ाया। खूब कटाक्ष किए, मगर कोई फर्क नहीं पड़ा। विपक्ष का आरोप है कि सरकार खुद हंगामा खड़ा करके सदन के कामकाज में बाधा डाल रही है। वह चाहती ही नहीं कि संसद में किसी मुद्दे पर बहस हो। दरअसल, संसदीय कार्यवाही को सुचारु रूप से चलाने की जिम्मेदारी सत्तापक्ष की होती है। अगर किन्हीं स्थितियों में विपक्ष का रुख अधिक आक्रामक हो जाता है और सदन की कार्यवाही में बाधा पड़ती है, तो संसदीय कार्यमंत्री सुलह-समझौते से गतिरोध दूर करने का प्रयास करते हैं। मगर लंबे समय से दोनों सदनों के कामकाज बाधित हैं और सरकार की तरफ से कोई ऐसा प्रयास नजर नहीं आता। अपेक्षा की जाती है कि जरूरी मसलों पर संसद के भीतर बहस हो और सर्वसम्मति से कोई फैसला किया जा सके। मगर पिछले कुछ समय से संसद में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच मूंछ की लड़ाई अधिक दिखाई देती है, बहसें विपक्ष संसद से बाहर करता है। पिछली सरकार के समय तो दोनों सदनों के डेढ़ सौ से ऊपर विपक्षी सदस्यों को निलंबित कर दिया गया। इस तरह कई मसलों पर आम लोगों के बीच भ्रम की स्थिति बनी रहती है। ऐसी स्थितियों में सदन के सभापति की भूमिका निर्णायक हो जाती है, उनसे उम्मीद की जाती है कि बिना किसी दलगत आग्रह के, राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर चर्चा कराएं और सरकार उस आधार पर उचित कदम उठाए। मगर न तो लोकसभा में और न राज्यसभा में ऐसी लोकतांत्रिक परंपरा दिखाई दे रही है। आखिर इस गतिरोध को दूर करने की जिम्मेदारी कौन निभाएगा और कैसे भरोसा किया जाए कि संसद में कामकाज ठीक से चल सकेगा।

इंडिया गठबंधन की रार से क्षेत्रीय दलों को होगा नुकसान?

कमलेश पांडे

राजनीतिक मामलों के जानकारों का स्पष्ट कहना है कि कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी के लिए हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा की हार जरूर मायने रखती है, क्योंकि यह जीती हुई बाजी हारने के जैसा है। लेकिन सिर्फ इसको लेकर ही इंडिया गठबंधन का नेतृत्व कांग्रेस से छीन लेना कोई राजनीतिक बुद्धिमानी का काम प्रतीत नहीं होता है। शायद कांग्रेस भी इसे नहीं मानेगी और किसी भी राष्ट्रीय दल को क्षेत्रीय दलों के सामने घुटने भी नहीं टेकने चाहिए, यदि सत्ता प्राप्ति के लिए संख्या बल का खेल नहीं हो तो! बीजेपी भी यही करती है और अपने गठबंधन सहयोगियों को उनकी वाजिब औकात में रखती है। तीसरे-चौथे मोर्चे की विफलता के पीछे भी तो अनुशासनहीनता या अतिशय महत्वाकांक्षा का खेल ही तो था, जिसे बहुधा राजनीतिक रोग समझा जाता है। बता दें कि तृणमूल कांग्रेस नेता कल्याण बनर्जी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव का परिणाम आने के बाद तुरंत कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन के नेता के रूप में मान्यता देनी चाहिए। इसके बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी हालिया हरियाणा और महाराष्ट्र चुनाव में इंडिया ब्लॉक के खराब प्रदर्शन पर असंतोष जाहिर किया और संकेत दिया कि अगर मौका मिला तो वह इंडिया ब्लॉक की कमान संभालने के लिए तैयार हैं। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सुप्रीमो ने यहां तक कहा कि वह बंगाल की मुख्यमंत्री के रूप में अपनी भूमिका जारी रखते हुए भी विपक्षी मोर्चे को चलाने की दोहरी जिम्मेदारी संभाल सकती हैं। एक टीवी चैनल से बात करते हुए ममता बनर्जी ने कहा, मैंने इंडिया ब्लॉक का गठन किया था, अब मोर्चा का नेतृत्व करने वालों पर इसका प्रबंधन करने की जिम्मेदारी है। अगर वे इसे नहीं चला सकते, तो मैं क्या कर सकती हूं? मैं सिर्फ इतना कहूंगी कि सभी को साथ लेकर चलना होगा। वहीं, यह पूछे जाने पर कि एक मजबूत भाजपा विरोधी ताकत के रूप में अपनी साख के बावजूद वह इंडिया ब्लॉक की कमान क्यों नहीं संभाल रही हैं? तो इस पर बनर्जी ने कहा, अगर मौका मिला तो मैं इसके सुचारू संचालन को सुनिश्चित करूंगी। उन्होंने कहा, मैं बंगाल से बाहर नहीं जाना चाहती, लेकिन मैं इसे यहीं से चला सकती हूं। बता दें कि बीजेपी का मुकाबला करने के लिए गठित इंडिया ब्लॉक में दो दर्जन से अधिक विपक्षी दल शामिल हैं। हालांकि, आंतरिक मतभेदों और आपसी तालमेल की कमी की वजह से इसकी कई बार आलोचना भी होती रही है। इसी वजह से इसके प्रमुख सूत्रधार रहे जदयू नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपना पाला बदल लिया और भाजपा के खेमे में चले गए। वो भी इंडिया गठबंधन के संयोजक का पद पाना चाहते थे, जो लालू प्रसाद के परोक्ष विरोध के चलते सम्भव नहीं हो पाया। ऐसे में संभव है कि ममता भी एकबार फिर से तीसरे मोर्चे को मजबूत करने की पहल करें और नीतीश की तरह ही इंडिया गठबंधन को टा-टा, बाय-बाय कर दें। उल्लेखनीय है कि ममता बनर्जी का यह बयान उनकी पार्टी सांसद कल्याण बनर्जी द्वारा कांग्रेस और अन्य इंडिया ब्लॉक सहयोगियों को लेकर दिए बयान के बाद सामने आया है। तब कल्याण बनर्जी ने कहा था कि कांग्रेस और इंडिया ब्लॉक को अपने अहंकार को अलग रखना चाहिए और ममता बनर्जी को विपक्षी गठबंधन के नेता के रूप में मान्यता देनी चाहिए। आपको बता दें कि बीजेपी ने जहां महाराष्ट्र में शानदार प्रदर्शन करते हुए रिकॉर्ड संख्या में सीटें हासिल कीं तो वहीं कांग्रेस का प्रदर्शन बेहद खराब रहा। बीजेपी के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन को भारी जीत मिली, जबकि इंडिया ब्लॉक ने सिर्फ झारखंड में जेएमएम के शानदार प्रदर्शन की बदौलत मजबूत वापसी की। कहने का तात्पर्य यह है कि कांग्रेस ने अपनी हार का सिलसिला जारी रखा और हरियाणा के बाद महाराष्ट्र में भी अपना सबसे खराब प्रदर्शन किया और झारखंड में सत्तारूढ़ जेएमएम के जूनियर पार्टनर के रूप में सामने आई और विपक्षी ब्लॉक में इसकी भूमिका और भी कम हो गई क्योंकि अन्य सहयोगियों ने इससे बेहतर प्रदर्शन किया। वहीं, दूसरी ओर हाल ही में हुए उपचुनावों में भाजपा को हराकर टीएमसी की जीत ने पश्चिम बंगाल में पार्टी के प्रभुत्व को मजबूत किया है, जबकि विपक्षी अभियान आरजी कर मेडिकल कॉलेज विरोध जैसे विवादों पर केंद्रित थे। सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले वाम मोर्चे, उसके सहयोगी सीपीआई (एमएल) लिबरेशन और कांग्रेस, जो इंडिया ब्लॉक में राष्ट्रीय स्तर पर टीएमसी के सहयोगी हैं, सभी को बड़ी असफलताओं का सामना करना पड़ा और उनके उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। जबकि कांग्रेस इंडिया ब्लॉक की सबसे बड़ी पार्टी है, जिसे अक्सर गठबंधन का वास्तविक नेता माना जाता है। यही वजह है कि टीएमसी ने लगातार ममता बनर्जी को गठबंधन की बागडोर संभालने की वकालत की है। यह ठीक है कि तृणमूल कांग्रेस नेत्री ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल में लगातार भाजपा को सियासी चोट पहुंचा रही हैं और सदैव उस पर भारी प्रतीत हो रही हैं, लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि वह राष्ट्रीय नेत्री बन गई और उनका चेहरा लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के चेहरे से ज्यादा सर्वस्वीकार्य हो गया, वो भी अखिल भारतीय स्तर पर? चाहे राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) शरद पवार के प्रमुख और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री शरद पवार हों या उनकी सियासी वारिस सांसद सुप्रिया सुले, शिवसेना यूबीटी के प्रमुख और महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे हों या उनके राजनीतिक वारिस आदित्य ठाकरे, समाजवादी पार्टी के प्रमुख और उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव हों या राज्यसभा सांसद रामगोपाल यादव या आप पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक व दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल हों या उन जैसे इंडिया गठबंधन के कोई अन्य नेतागण, किसी का चेहरा राष्ट्रीय स्तर पर उतना सर्वस्वीकार्य नहीं हो सकता है जितना कि राज्यसभा सांसद सोनिया गांधी, लोकसभा सांसद प्रियंका गांधी या लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का है। इसलिए समकालीन बयानबाजी से इंडिया गठबंधन और उसमें शामिल सभी दलों को ही क्षति होगी, यह उन्हें समझना होगा।

हर सुबह बदलते मौसम की सूचक...

कृष्ण कुमार रत्तू

बदलाव प्रकृति का नियम है और इस बदलाव की प्रक्रिया में ऋतुओं का चक्र हर नए मौसम की नई उमंगों और नई तरंगों के साथ मानवीय मन-मस्तिष्क और हृदय में नई ऊर्जा का संचार करता है। प्राकृतिक रंगों और बदलते मौसम का यह खूबसूरत दृश्य संपूर्ण धरती और सौरमंडल को रंगों के इस उत्सव में भिगो देता है। जब से मनुष्य का जन्म हुआ है, तब से रंगों की प्रक्रिया, बदलते मौसम और ऋतुओं के इस चक्र से पूरा जहान रंगों के आनंद में बह जाता है। बदलते मौसम की यह प्रक्रिया और रंगों की रूमानी चादर इस तरह से बदलती है कि धरती का हर लम्हा हर मौसम में नया लगता है। इसका मर्म यह है कि धरती पर रहने वाले सब पशु-पक्षी और इंसान अपनी जिंदगी के लिए रंगों के आवरण में रंग कर मौसम का लुत्फ लेकर अपने आप को हर मौसम के लिए जिंदा रख सकें। जिंदा रहने और आगे बढ़ने का एक नया रास्ता मनुष्य को नई सांसों की पूंजी से भर देता है। खूबसूरती यह है कि जिंदगी और रंगों की इस अद्भुत दौड़ में यह सब कुछ ऐसे होता जाता है और इस तरह जीवन में और मौसम के साथ आता है कि हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते कि किस वक्त कौन-सा मौसम और ऋतुओं का चक्र और कौन-सा मौसमी रंग बदल गया है। गर्मी, सर्दी, बारिश और बसंत का मौसम आंख झपकते ही हमें नए जोश और उत्साह से भर देता है। यों दुनिया भर के साहित्य में मौसमों को प्रकृति और इंसान के बीच बदलाव की प्रक्रिया को खूबसूरत शब्दों में बयान किया गया है। कहते हैं कि हर सुबह बदलते मौसम की सूचक है। सूर्य की पहली किरणें हर नए रंग से हमें इस धरती पर रहने वाले जीव-जंतु, पौधे, वनस्पति को रोमांस से भर देती हैं। यही धूप का साया है और यही रंगों की आमद है, जो जिंदगी की निशानी है। पर इन बदलते मौसम में रंगों का मौसम कैसे धीरे-से हमारे जीवन में बिना आहट के आ जाता है कि हम अंदाजा भी नहीं लगा पाते। अक्तूबर में हल्की गर्मी की ढलान से थकी हुई धूप के बाद नवंबर में गुलाबी ठंड की दस्तक भी अब दिसंबर के सफर पर चल पड़ी है। यही शरद ऋतु का नजारा और रंग ऋतुओं के रंगों की महकती हुई हवा नई जिंदगी और नए समय की प्रभात का एक नया रंग है। रंगों का यह मौसम है जो जिंदगी को अपने रंग से ढक देता है। बदलते मौसम में सही से प्रकृति के जादू का मौसम शुरू हो रहा है। विज्ञान की दुनिया में धरती के जिन मुद्दों को लेकर इन दिनों बहस है कि बदलते हुए मौसम और बदलते हुए रंगों में से जिस तरह से हमने पर्यावरणीय तत्वों को लेकर पूरी धरती को जहरीली गैसों से भर दिया है, उससे हमारे जीवन पर इन प्राकृतिक रंगों के ऐसे धब्बे पड़ गए हैं, जिनसे हमारा जीवन और जीने के लिए साफ हवा-पानी प्रायः खत्म होता जा रहा है। हमने प्रकृति के दिए हुए सारे रंगों को नष्ट कर दिया है। बदलते मौसम और प्रकृति के इन रंगों के पर्यावरण मुद्दों ने रंगों की प्रक्रिया को इतना बिगाड़ दिया है कि अब हमारे जीने पर ही प्रश्नचिह्न लग गया है। इस समय सच यह है कि हमने पूरी दुनिया के जल, जंगल, जीवन और समंदर को भी जिस तरह से दूषित कर दिया है, वह दूसरे ही रंग की कहानी कहता है। रंगों का यह मौसम एक नई शुरुआत का मौसम है और यह धीरे से हमारे जीवन में हल्की गुलाबी सर्दी के आकाश में नए रंगों की आमद और उसकी आभा के रंग है और और शरद ऋतु के आते-जाते चारों तरफ धरती पर लाल, नारंगी, पीले और गहरे हरे रंग में नजर आती धरती पर छाई हुई चादर पहाड़ी और नीम पहाड़ी इलाकों में पूरी दुनिया में एक-सी धवल दृश्य को दिखाती है। रंगों के प्राकृतिक बदलाव की सत्ता को भी देखा जा सकता है और हम अंदाजा नहीं लगा सकते कि यह कौन चित्रकार है, कौन इसको रखता है और किस तरह से इस धरती को रंगों के शृंगार से हल्की ठंड और गुलाबी सम्मोहन की धूप से पेड़ पौधों में और वनस्पति में आदमी को नए क्षितिजों की ओर देखने के लिए एक नए उत्साह और उमंग से भर देता है। कश्मीर और पूर्वोत्तर में जिस तरह की वनस्पतियां होती हैं, वे अद्भुत हैं। वह स्विट्जरलैंड के बर्फ से लदे पहाड़ों से भी कहीं ज्यादा खूबसूरत है। हमारे कश्मीर में इस मौसम को हरुद कहा गया है और सूफियों से लेकर नए कवियों तक लिखने वालों ने इस मौसम की खूबसूरती को बयां किया है। कश्मीर के लोग जानते हैं कि इन दिनों वहां पर बहुतायत में पाए जाने वाले मेपल के पेड़ों के पत्ते किस तरह रंग बदलते हैं और भूरे रंग से वहां की पहाड़ियां और धरती ढक जाती हैं। वहां के आदि सूफियों की कविता में इसे जादुई मौसम का नाम दिया गया है।

ग्राउंड जीरो पर बाल कल्याण क्षेत्र में 'यूनिसेफ' की भूमिका बेहतरीन

भारत के नजरिए से यूनिसेफ़ को देखें, तो वर्ष-1949 में मात्र तीन सदस्यीय स्टाफ़ ने हमारे यहां काम आरंभ किया। लेकिन सन् 1952 में दिल्ली में अपना एक कार्यालय स्थापित किया। वर्तमान में, समूचे भारत में इनके 16 राज्यों में कार्यालय हैं। बाल कल्याण की बात हो या उनके अधिकारों की रक्षा, दोनों में प्रहरी की भूमिका निभाती है 'यूनिसेफ'। इसलिए यूनिसेफ का नाम सुनते ही मन-मस्तिष्क में बच्चे ईर्द गिर्द घूमने लगते हैं। साथ ही उनकी समस्याओं और सुधारो प्रयासों का जिक्र भी होने लगता है। आज 'विश्व यूनिसेफ दिवस' है। एक ऐसी संस्था जो संसार के 190 देशों के बेहद दुर्गम स्थानों पर पहुंचकर कर बच्चों के अधिकारों की हिमायत के लिए मजबूती से लड़ती है। बाल कल्याण की सुविधाएं विश्व के प्रत्येक जरूरतमंद, कमजोर और वंचित बच्चों तक पहुंचे, इसलिए लिए यूनिसेफ की टीमें चौबीसों घंटों ग्रांउड जीरो पर तैनात रहती हैं। यूनिसेफ़ का मतलब होता है 'संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष' जिसका आरंभ 11 दिसंबर, 1946 को 'संयुक्त राष्ट्र महासभा' द्वारा किया गया था। शुरुआती वक्त में संस्थान में मात्र 43 देश शामिल हुए थे, लेकिन कुछ वर्षों बाद ये संख्या 100 पार कर गई। पर, आज इस संस्था में 190 मुल्क जुड़े हैं। संख्या में धीरे-धीरे इजाफा हो रहा है। यूनिसेफ के 5 लाख प्रतिनिधि इस समय पूरे संसार में कार्यरत हैं। वहीं, भारत में 18 हजार के करीब वर्कर दुर्गम स्थानों पर बाल कल्याण के क्षेत्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। बाल तस्करी की रोकथाम में इनकी अगल से टीमें कार्य करती हैं। हिंदुस्तान में रोजाना करीब 69,000 बच्चे पैदा होते हैं। उन सभी नौनिहालों के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा और बाल संरक्षण में यूनिसेफ इंडिया बेहतरीन कदम उठाने को संकल्पित होता है। मौजूदा समय में यूनिसेफ की टीमें युद्धग्रस्त यूक्रेन-रूस, ईरान-इराक, अफगानिस्तान जैसे मुल्कों में अधिकांश जुटी हैं। वहां अभावग्रस्त बच्चों की परवरिश करने के अलावा उनकी शिक्षा-स्वास्थ्य में लगे हैं। वैसे देखा जाए तो, विश्व को यूनिसेफ़ की कार्यशैली द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तब ज्यादा दिखी, जब इनके योद्धाओं ने बिना अपनी जान की परवाह किए युद्ध से आहत, असहाय, बेघर बच्चों को जरूरती सामानों की आपूर्ति, विभिन्न किस्म की सहायताएं और स्वास्थ्य में सुधार के अभियानों को चलाया। जैसे-जैसे समय बदला, यूनिसेफ़ ने अपनी कार्यशैली में और बदलाव किए। पहले इनका काम सिर्फ बाल अधिकारों की रक्षा के लिए जाना जाता था। लेकिन उसके बाद बच्चों के बेहतर जीवन को बनाने का भी जिम्मा इन्होंने अपने कंधों पर उठा लिया। फिलहाल वक्त में, यूनिसेफ की टीमें माताओं और नवजात शिशुओं के लिए एचआईवी की रोकथाम और उपचार, पर्याप्त पानी, स्वच्छ वातावरण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास, बाल स्वास्थ्य व पोषण जैसे क्षेत्रों में भी कार्यरत हैं। भारत के नजरिए से यूनिसेफ़ को देखें, तो वर्ष-1949 में मात्र तीन सदस्यीय स्टाफ़ ने हमारे यहां काम आरंभ किया। लेकिन सन् 1952 में दिल्ली में अपना एक कार्यालय स्थापित किया। वर्तमान में, समूचे भारत में इनके 16 राज्यों में कार्यालय हैं। जहाँ ये बच्चों के अधिकारों की हिमायत करते हैं। भारत में इनका प्रतिनिधित्व सिंथिया मैककैफे करती हैं जिनकी नियुक्ति अक्टूबर 2022 में हुई थी। भारत सरकार अपने बजट से बड़ी रकम इनको सालाना आंवटित करती है। ताकि हमारे यहां दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले वो बच्चे भी इनके जरिए शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ सकें, जो सरकार की नजरों से छूट जाते हैं। यूनिसेफ का मुख्यालय, न्यूयॉर्क, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थापित है।

आज का राशिफल

मेष: [illegible] शुभांक-2-6-8

वृषभ: [illegible] शुभांक-1-3-5

मिथुन: [illegible] शुभांक-3-5-7

कर्क: [illegible] शुभांक-6-8-9

सिंह: [illegible] शुभांक-2-5-7

कन्या: [illegible] शुभांक-2-5-7

तुला: [illegible] शुभांक-2-5-6

वृश्चिक: [illegible] शुभांक-2-4-8

धनु: [illegible] शुभांक-4-6-8

मकर: [illegible] शुभांक-5-7-9

कुंभ: [illegible] शुभांक-4-6-7

मीन: [illegible] शुभांक-5-7-9

सुडोकू पहेली — क्रमांक- 5447

		2		6	1			9
8		5	4				7	6
6		4						
		3		5	2			
			8		7			
			9	3		2		
						1		2
3	6				8	4		7
2			1	4		9		

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5446

1	4	2	7	3	9	5	6	8
5	3	9	1	6	8	2	7	4
7	6	8	2	5	4	9	3	1
3	1	4	9	8	6	7	2	5
8	9	5	3	7	2	1	4	6
2	7	6	4	1	5	3	8	9
4	5	3	6	9	7	8	1	2
9	2	7	8	4	1	6	5	3
6	8	1	5	2	3	4	9	7

वर्ग पहेली 5447

संकेत: बाएं से दाएं

1. 1923 को इस प्रख्यात [illegible] व भूतपूर्व केंद्रीय कानून मंत्री ने जन्म लिया था (7)
7. [illegible] (2)
8. आक्रमण करने वाला (5)
10. [illegible] (4)
11. असफल, विफल (5)
15. [illegible] (4)
16. [illegible] (2)
17. [illegible] (3)
18. भटका हुआ, पथ भ्रष्ट (4)
19. कुछ समय के लिए रुकना, ठहरना (3)
22. [illegible] (2)
23. [illegible] (2)
24. [illegible] (2)

संकेत: ऊपर से नीचे

1. रामभक्त होने के कारण हनुमान का एक नाम, दक्षिण भारत के प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति शिवाजी के गुरु थे (4)
2. [illegible] (3)
3. [illegible] (4)
4. मित्र या मैत्री (संस्कृत) (2)
5. भारत की ओर से पहला शतक लगाने वाले क्रिकेटर (7)
6. [illegible] (2)
9. [illegible] (4)
12. [illegible] (2)
13. [illegible] (2)
14. [illegible] (2)
16. हिंदी के बारह महीनों में से एक (3)
17. [illegible] (3)
20. [illegible] (2)
21. [illegible] (2)

वर्ग पहेली 5446 का हल

[illegible]

भगवान पशुपतिनाथ के साथ सेल्फी से कराया समझौता, बिछड़ा परिवार हुआ एक

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। राष्ट्रीय लोक अदालत खण्डपीठ क्र. 17 में विगत कई वर्षों र्से बिछडा हुआ परिवार एक हुआ, जब श्री गंगाचरण दुबे, प्रधान न्यायाधीश, कुटुम्ब न्यायालय द्वारा मध्यस्थता कर स्वयं के साथ पति द्वारा सेल्फी न लेने के कारण रूठी हुई पत्नी को भगवान पशुपतिनाथ के मंदिर भेजकर भगवान को साक्षी मानकर अपनी पत्नी के साथ सेल्फी लेने हेतु निर्देशित किया। पति द्वारा न्यायालय के आदेश का पालन किए जाने पर घर छोड़कर गई नाराज पत्नी अपना गुस्सा छोड़कर पति के साथ जाने को तैयार हो गई और बिछ्ड्रा परिवार एक हो गया।

घटना यह है कि पायल (परिवर्तित नाम) का विवाह महेन्द्र (परिवर्तित नाम) के साथ 21 दिसम्बर 2020 को हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार ग्राम छाजूखेड़ा, तहसील व जिला मंदसौर में सम्पन्न हुआ था। पायल मात्र चार-पांच दिन अपने ससुराल में रही, उपरांत वह अपने पीहर आ गई। जब महेन्द्र उसे लेने गया, तो उसकी पत्नी तथा उसके परिजनों ने उसके साथ गाली-गलौच कर अपमानित किया और अभद्र व्यवहार कर भगा दिया। विगत चार वर्षों के दौरान अनेकों प्रयासों के बाद पत्नी विवाद समाप्त करने नहीं आई और महेन्द्र को दाम्पत्य सुखों से वंचित कर दिया, दोनों के मध्य विवाद इतना बढा कि बात तलाक तक जा पहुंच गई। महेन्द्र ने दाम्पत्य अधिकारों की पुनर्स्थापना और तलाक की याचिका प्रस्तुत कर दी। वहीं पायल ने भरण-पोषण दिलाए जाने का प्रकरण प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय लोक अदालत के अवसर पर जब श्री गंगाचरण दुबे, प्रधान न्यायाधीश, कुटुम्ब न्यायालय ने पति-पत्नी से संवाद किया तो ज्ञात हुआ कि वास्तविक विवाद क्रूरता या पति-पत्नी के परित्याग अथवा पत्नी के परिजनों द्वारा पति के साथ अभद्रता किए जाने का नहीं है, अपितु पत्नी की शिकायत यह थी कि महेन्द्र अपनी पत्नी के साथ सेल्फी नहीं लेता था, वह अकेले ही सेल्फी लेकर सोशल मीडिया पर अपलोड करता था, पत्नी के साथ मंदिर नहीं जाता था और उसे लोगों के बीच नहीं ले जाता था। इसी विवाद के चलते पत्नी नाराज होकर मायके चली गई और उसने महेन्द्र के साथ आने से मना कर दिया। समझौतावार्ता के दौरान श्री गंगाचरण दुबे, प्रधान न्यायाधीश, कुटुम्ब न्यायालय ने वास्तविकता ज्ञात कर पति को आदेशित किया कि अपनी पत्नी को तैयार कर वह, भगवान पशुपतिनाथ को साक्षी मानते हुए पति-पत्नी का सेल्फी से लिया गया छायाचित्र प्रस्तुत करे, भविष्य में अपनी पत्नी के साथ छायाचित्र और सेल्फी आदि लेते रहने हेतु आश्वस्त करे। पति द्वारा न्यायालय के आदेश का पालन करने पर नाराजगी छोड़कर पत्नी, पति के साथ जाने को तैयार हो गई। राष्ट्रीय लोक अदालत के अवसर पर न्यायालय के आदेशानुसार पुलिस थाना नई आबादी के आरक्षक राजकुमार, क्र. 522 एवं भगवान पशुपतिनाथ मंदिर के प्रबंधन के सहयोग से मंदिर में ली गई सेल्फी का फोटो प्रस्तुत किया तथा दाम्पत्य अधिकारों को पुनर्स्थापित करा लिया। मामले में पायल की ओर से मुकेश माली और महेन्द्र की ओर से नेपालसिंह राठौर अधिवक्ताओं ने न्यायमित्र के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं।

एकपक्षीय तलाक निरस्त कर पति-पत्नी का घर बसाया-राष्ट्रीय लोक अदालत खण्डपीठ क्र. 17 में वर्ष 2021 से बिछड़ा हुआ परिवार एक हो गया, विशेषकर तब जब भारतीय थल सेना में सैनिक के पद पर कार्यरत विकास चौहान (परिवर्तित नाम), जिसने दिनांक 27.07.2024 को एकपक्षीय रूप से तलाक भी प्राप्त कर लिया था और उसके पक्ष में न्यायालयीन सूचना उपरांत पत्नी के उपस्थित न होने पर विवाह विच्छेद की आज्ञप्ति पारित कर दी गई थी। इस एकपक्षीय आज्ञप्ति की सूचना न्यायालय द्वारा उसकी पत्नी संगीता (परिवर्तित नाम) को दी गई, तो उसने न्यायालय में उपस्थित होकर न्यायालय को अवगत कराया कि उसके पति ने धोखा कर विवाह विच्छेद प्राप्त किया है, पति ने उसे फोन पर साथ रखने का आश्वासन दिया था और कहा था कि विवाह विच्छेद की याचिका वापस ले ली है और उसने धोखा करते हुए एकपक्षीय निर्णय प्राप्त कर लिया, उसने पत्नी को भ्रम में रखने के लिए पत्नी के खाते में कुछ राशि भी ट्रांसफर की, फोन कॉल, एस.एम.एस. कर विवाह विच्छेद के प्रकरण में उसे बहकावे में रखा। पत्नी ने एकपक्षीय निर्णय व आज्ञप्ति दिनांक 27.07.2024 को अपास्त करने के लिए आदेश 09 नियम 13 व्य.प्र.सं. के अंतर्गत कार्यवाही की। राष्ट्रीय लोक अदालत के अवसर पर गंगाचरण दुबे, प्रधान न्यायाधीश, कुटुम्ब न्यायालय द्वारा मध्यस्थता की गई और वास्तविक विवाद को जाना तो ज्ञात हुआ कि फौजी पति के अवकाश की अवधि में पत्नी ससुराल में रहती थी और अवकाश खत्म होते ही वह अपने मायके प्रवास कर लेती थी, जिससे फौजी की विधवा मां को अनेकों परेशानियों का सामना करना होता था। बहू के कर्तव्यों की समझाइश दी गई तथा नाराज पति को पारिवारिक सुलह हेतु तैयार किया गया. तो ज्ञात हुआ कि पत्नी ने महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत आंगनबाड़ी में नौकरी आरंभ कर दी थी, जिसके कारण भी वह ससुराल नहीं आना चाहती थी। पारस्परिक सहयोग और समन्वय के साथ सुलाह कराई गई तथा महिला एवं बाल विकास विभाग के वरिष्ठअधिकारियों को परिवार बचाने हेतु नियमानुसार आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के नियोजन को उसकी ससुराल पर सुनिश्चित कराए जाने हेतु अनुरोध भी भेजा गया, जिससे पक्षकारों के मध्य सुलह हुई और तलाक से समाप्त हो चुके वैवाहिक संबंध की एकपक्षीय आज्ञप्ति अपास्त करने के बाद बिछड़ा परिवार एक हो गया। मामले में संगीता की ओर से मोहम्मद अकबर कुरैशी और विकास चौहन की ओर से आदित्य दशौरा अधिवक्ताओं ने न्यायमित्र के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। राष्ट्रीय लोक अदालतके अवसर पर कुटुम्ब न्यायालय, मंदसौर में कुल 101 प्रकरणों का निराकरण हुआ, जिसमें से लगभग 30 परिवारों को एक किया गया। वर्षात की चौथी लोक अदालत अपने सर्वाधिक प्रकरणों एवं अनुठे निर्णयों के लिए चर्चित रही।

भाजपा के खिलाफ कार्यकर्ता लड़ाई खुल कर लड़े, पार्टी उनके पीछे खड़ी-चौधरी

जिला कांग्रेस अध्यक्ष विपिन जैन के नेतृत्व में आयोजित कार्यकर्ताओं की जिला बैठक संपन्न

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। वर्तमान सरकार द्वारा जनता से किए गए वादों की वादा खिलाफी, किसानों की उपज का दाम ना मिलना दलित, आदिवासियों पर बढते अत्याचार, प्रदेश में बढते भ्रष्टाचार, महिलाओं पर बढते अपराध को लेकर आज जिला कांग्रेस कार्यालय में जिला कांग्रेस की बैठक रखी गई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य 16 दिसंबर को भोपाल में अधिक से अधिक संख्या में कार्यकर्ता विधानसभा घेराव व प्रदर्शन को लेकर रखी गई थी। वर्तमान में पार्टी में समर्पण भाव के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। निराशा का वक्त खत्म करें कार्यकर्ता संगठन को मजबूत करने में जुट जाए। श्री जैन ने आगे कहा की वर्तमान प्रदेश सरकार की वादा खिलाफी के खिलाफ हम सब कार्यकर्ताओं को एक लक्ष्य के साथ भोपाल में अधिक से अधिक संख्या में विधान सभा घेराव व प्रदर्शन में शामिल होना है।

इस अवसर पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सचिव व मध्यप्रदेश सह प्रभारी श्री आनंद चौधरी ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा की कांग्रेस पार्टी में काम करने वाले को हम आगे बढ़ाएंगे। हमें पद मिले या ना मिले हमें जमीनी स्तर पर कार्य करना होगा किसी भी कार्यकर्ता के साथ अन्याय हुआ तो कांग्रेस पार्टी उसके साथ सदैव खडी है। कमजोर वर्गो र्की लड़ाई कांग्रेस पार्टी हमेशा से लड़ती आई है और आगे भी लड़ेगी। इस अवसर पर मध्य प्रदेश युवक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व विधायक डॉ विक्रांत विक्रांत भूरिया ने कहा आज देश के साथ-साथ संविधान को बचाने की आवश्यकता है और यह लड़ाई पूरे देश में कांग्रेस पार्टी मजबूती के साथ लड़ रही है। पुराने सच्चे कार्यकर्ता व नेता हमारी पूंजी है राजनीति में वही टिकेगा जो संघर्ष करेगा । इस अवसर पर लोकसभा प्रत्याशी रहे दिलीप सिंह गुर्जर ने कहा की आज पार्टी को देने की आवश्यकता है पार्टी में समर्पण के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर पूर्व जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश रातडिया प्रदेश कांग्रेस सचिव महेंद्र सिंह गुर्जर, मल्हारगढ़ विधानसभा प्रत्याशी रहे परशुराम सिसोदिया, जिला संगठन मंत्री राजेश सिंह रघुवंशी, जिला कांग्रेस के पदाधिकारी में कांतिलाल राठौर मनजीत सिंह मनी, डॉ प्रीति पाल सिंह राणा, दुर्गेश पटेल, राजेश सोलंकी, सम्यक जैन आदि ने भी अपने विचार रखें।

कार्यक्रम के दौरान किसानों की डट कर लड़ाई लड़ने वाले जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष बद्रीलाल धाकड का अतिथियों ने पुष्पमाला पहनकर सम्मान कर बधाई दी इस अवसर पर पूर्व विधायक श्री नवकृष्ण पाटिल पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष मोहम्मद हनीफ शेख , जिला कांग्रेस पदाधिकारी में सर्वश्री डॉ अजीत जैन, अजहर हयात मेव, तरुण खींची, संजय सोनी, खलील पठान, आसिफ छिपा, भोपाल सिंह सोलंकी, अजय लोढ़ा, सकलेन करार, लियाकत मेव, आरिफ बैग, आदित्य पाटील, राजेश फरक्या, रमेश सिंगार, विश्वास दुबे, जितेंद्र सोपरा, विजय सिंह सिसोदिया, हरि सिंह मीणा, प्रहलाद शर्मा, कोमलराम बघेरिया, कमलेश जैन, माजिद चौधरी, समरथ गुर्जर, शंभूलाल चौहान, अहमद नूर मंसूरी, सुनील बसेर, गोविंद सुरा, सुदर्शन सिंह शक्तावत, विनोद शर्मा, कमलेश सोनी, इशरत शेख, जगन्नाथ पटेल धर्मेंद्र शर्मा, योगेंद्र जोशी बालमुकुंद माली साबिर इलेक्ट्रीशियन ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष में सर्वश्री अनिल शर्मा, गोपाल विश्वकर्मा, सुरेश पाटीदार, ईश्वर धाकड़, कमलेश जयसवाल, विकास दशोरा, कृपाल सिंह सोलंकी, बसंती लाल सोलंकी, मोर्चा संगठन में सेवादल जिला अध्यक्ष दिलीप देवड़ा, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष यूनुस मेव, अजा विभाग के जिला अध्यक्ष संदीप सलोद, महिला कांग्रेस जिला अध्यक्ष रूपल संचेती, उद्योग प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष निर्विकार रातडिया, आईटी सेल समन्वयक मिथुन कटारिया, सुवासरा विधानसभा प्रत्याशी रहे राकेश पाटीदार, किसान नेता डीपी धाकड़, अनोखी लाल सोलंकी। महिला नेत्रों में सर्वश्री श्रीमती अनीता भदोरिया योगिता बैरागी नेहा कनकमाल जैन वर्षा सांखला आशा भाबी, शहर ब्लॉक कार्यवाहक अध्यक्ष सलीम खान, मंडलम अध्यक्ष में सर्वश्री रमेश ब्रिजवानी, वकार खान, पंकज जोशी, विजय जैन, अजय सोनी, साथ ही इस अवसर पर विजेश मालेचा, राजेंद्र सेठिया, प्रवीण मागरिया, अनिल मुलासिया, शैलेंद्र गोस्वामी, आमीन मेव, मुबारीक मेंव, अक्षय सेठिया, भाविक संचेती, रमेश कामराज, महेश गुप्ता, राजपाल गुर्जर आदि इस अवसर पर बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के लिए ऑनलाईन आवेदन करें

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। जिला उप संचालक उद्यान द्वारा बताया गया कि उद्यमियों को व्यवसाय स्थापित करने के लिए झचऋचए योजनान्तर्गत लहसुन प्रसंस्करण उत्पाद जैसे गार्लिक पिलिंग, गार्लिक पेस्ट, पावडर, चिप्स, संतरा ज्यूस, हल्दी पावडर, मिर्च पावडर, आंवला अचार, मुरब्बा, अमरूद जैम, जैली तथा अन्य सभी प्रकार के प्रसंस्करण उत्पाद आईल मील, दाल मील, डेयरी उत्पादों से संबंधित इकाईयों का निर्माण करने हेतू वेबसाइड http://pmfme .mofpi. gov.in `m https://agriinfra.dac.gov.in/ पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते है तथा AIF (एग्रीकल्चर इन्फ्रास्ट्रक्चर फण्ड) योजनान्तर्गत प्राइमरी इकाई निर्माण जैसे cleaning, shorting, grading, milling, grinding, storage, drying, packing, cold, storage, pack house इत्यादि पर 03 प्रतिशत ब्याज ऋण पर अनुदान शासन द्वारा दिया जाएगा।

विद्युत के दक्षतापूर्वक उपयोग से ही ऊर्जा संरक्षण में मिलेगी मदद

जबलपुर, 14 दिसम्बर। ऊर्जा संरक्षण दिवस के अवसर पूरे प्रदेश में मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर एमपी ट्रांसको के मुख्यालय शक्ति भवन जबलपुर सहित प्रदेश के ट्रांसमिशन लाइन मेंटेनेंस उपसंभागों, 416 सबस्टेशनों , मैदानी कार्यालयों में प्रबंध संचालक इंजीनियर सुनील तिवारी के संदेश का वाचन किया गया और सप्ताह भर ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक करने गतिविधियां आयोजित की गई है। अपने संदेश में प्रबंध संचालक ने आव्हान किया कि सभी विद्युत का उचित और दक्षतापूर्वक उपयोग करें ताकि ऊर्जा संरक्षण में मदद मिल सकें। उन्होंने कहा कि म.प्र. पावर ट्रांसमिशन कंपनी विद्युत क्षेत्र में सतत विकास लक्ष्य को प्राथमिकता देने के प्रति संवेदनशील और गंभीर है।

विद्यार्थियों को स्वेटर का वितरण किया

सेमलियाहीरा, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। आज दिनांक 14/12/24 को इनर व्हील क्लब मंदसौर द्वारा ग्राम सेमलिया हीरा के एकीकृत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कक्षा 1ली से 9वीं के विद्यार्थियों को स्वेटर वितरण किया गया एवं विद्यालय को वाटर फिल्टर भेंट स्वरूप प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में इनर व्हील क्लब की अध्यक्ष श्रीमती शर्मीला बसेर, सचिव श्रीमती सोनिया खिमेसरा, पूर्व अध्यक्ष श्रीमती आशा जी काबरा एवं श्रीमती प्रीति छाबड़ा, श्रीमती कल्पना बसेर उपस्थित थीं। श्रीमती प्रीति छाबड़ा की ओर से वाटर फ़िल्टर एवं श्रीमती कल्पना बसेर, श्रीमती आभा त्रिवेदी एवं श्रीमती निशा सोनी की ओर से स्वेटर वितरण किया गया। उक्त कार्यक्रम में विद्यालय के स्टॉफ सदस्य एवं अभिभावक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एकीकृत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती मोनिका भटनागर एवं आभार प्रदर्शन प्राचार्य श्री बी.एल. हमरोदिया ने किया।

विवाहित जोड़ों में कराई आपसी, खुशी-खुशी घर गए

पिपलियामंडी, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश श्रीमती साक्षी प्रसाद के न्यायालय में इस वर्ष की अंतिम लोक अदालत में 05 जोडें साथ-साथ रहने पर सहमत होकर घर गए। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मंदसौर कपिल मेहता व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव व न्यायाधीश सिद्धार्थ तिवारी के मार्गदर्शन एवं तहसील विधिक सेवा समिति नारायणगढ अध्यक्ष व न्यायाधीश डालचन्द के मार्गदर्शन में इस वर्ष की आखरी नेशनल लोक अदालत का आयोजन शनिवार को तहसील न्यायालय नारायणगढ़ में हुआ। न्यायाधीश डालचन्द ने कहा इस नेशनल लोक अदालत की उपयोगिता तभी सार्थक है, जब इसमें अधिक से अधिक राजीनामें हो, इससे पक्षकारों का समय और धन दोनों बचेगें। इसके साथ ही न्यायालय पर प्रकरणों का भार कम होगा, इसके लिये 3 खंडपीठों का गठन किया है। जिसमें प्रीलिटिगशन के न्यायालय में लंबित आपराधिक, परकाम्य लिखित अधिनियम की धारा 138 के चेक बाउस संबधी, धन वसूली संबधी, भरण पोषण प्रकरणों का निराकरण के लिये रखा गया। जिसकी सुनवाई के बाद खंडपीठ के पीठासीन अधिकारियों द्वारा निराकरण कर पक्षकारों को लाभांवित किया गया। इस लोक अदालत में न्यायाधीश डालचन्द के न्यायालय में 50 प्रकरणों, न्यायाधीश सौरभकुमारसिंह के न्यायालय में कुल 52 प्रकरणों तथा न्यायाधीश श्रीमती साक्षी प्रसाद के न्यायालय में कुल 60 प्रकरणों में राजीनामा हुआ। इस प्रकार श्रीमती साक्षी प्रसाद द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खंड, खंडपीठ कमांक 31 के न्यायालय में पक्षकारो श्रीमती कृष्णा व महेश, श्रीमती पूजा व राजू श्रीमती कृष्णा व अर्जुन श्रीमती अंजुबाला व लालचन्द श्रीमती राधा व राजेन्द्र का अपने पति से कई वर्षों र्से मन मुटाव होने से दम्पती पृथक-पृथक निवास करने लगे थे, माननीय न्यायालय व अभिभाषक व सामाजिक कार्यकर्ता के प्रयासों से दोनों के मध्य विवाद आपसी समझौते से समाप्त हुआ था दोनों साथ-साथ रहने पर सहमत हुये एवं दम्पति ने एक दुसरे को माला पहनाई एवं न्यायालय परिसर से ही साथ रहने के लिये दोनों न्यायालय से गये। तहसील न्यायालय नारायणगढ़ में राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने में अभिभाषक संघ अध्यक्ष एम. सय्यद मंसूरी, सचिव अरविंद पाटीदार समस्त अधिवक्ता गण, थाना प्रभारी नारायणगढ अनिल रघुवंशी, सामाजिक कार्यकता, भारतीय स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक, बी.एस.एन.एल के प्रतिनिधि व न्यायिक कर्मचारीगण का सराहनीय योगदान रहा है।

विद्यार्थियों ने किया प्रदर्शनी का अवलोकन

नीमच, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। प्रदेश के साथ ही नीमच जिले में मुख्यबमंत्री जनकल्यायण अभियान के तहत 11 दिसम्बबर के 26 दिसम्ब र 2024 तक

जनकल्याधण पर्व आयोजित किया जा रहा हैं। जनकल्याकण पर्व के अवबसर पर म.प्र.जनसंपर्क संचालनालय भोपाल द्वारा कलेक्टोतरेट परिसर नीमच में लगाई गई प्रदर्शनी म.प्र.सरकार द्वारा पिछले एक साल में हांसिल उपलब्धियों को बयां कर रही हैं। यह प्रदर्शनी लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। शनिवार को अनुसूचित जाति बालक छात्रावास नीमच के छात्रों ने इस प्रदर्शनी का अवलोकन कर म.प्र.सरकार की उपलब्धिों की जानकारी हांसिल की।

बघाना में निकली भागवत कथा की कलशयात्रा

नीमच, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। राधाकृष्ण मंदिर समिति बघाना के तत्वावधान में 13 से 19 दिसम्बर 2024 तक संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा प्रतिदिन दोप. 1 से सायं 4 बजे तक राधाकृष्ण मंदिर, कृष्णचौक, बघाना नीमच पर आयोजित की गई है, जिसमें कथा व्यास श्रीधाम वृन्दावन श्री नारायण गौ सेवा धाम जियागांव के पं.लोकेशकृष्ण शास्त्री अमृतमयी भागवत गंगा का श्रवण भक्तों को करा रहे हैं।

उक्त जानकारी देते हुए समिति पदाधिकारियों ने बताया कि 13 दिसम्बर को भव्य कलश यात्रा राधाकृष्ण मंदिर से प्रारंभ हुई जो अहीर मोहल्ला एवं बघाना के प्रमुख मार्गों र्से होती हुई पुन: कथास्थल पर पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। कलश यात्रा में बडी संख्या में महिलाओं ने सिर पर कलश धारण किए चल रही थीं। कलश यात्रा में पोथी शीश पर धारण करने का सौभाग्य जगदीशचन्द्र अहीर (दुल्ला पहलवान) एवं श्रीमती श्यामादेवी अहीर ने प्राप्त किया। श्रीमद्भागवत कथा के प्रथम दिवस पं.लोकेशकृष्ण शास्त्री ने कहा कि श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा श्री कृष्ण के जीवन चरित्र का वांग्मय स्वरूप है यह मुक्ति का मार्ग दिखाती है। जीवन जीने की कला सिखाती है। श्रीमद्भागवत ज्ञान वेदों का सार है। भागवत श्रवण से जीवित मनुष्य तो क्या प्रेतात्मा का भी कल्याण हो जाता है और मुक्ति मिलती है। संसार के सभी सुखों से महत्वपूर्ण श्रीमद् भागवत सत्संग होता है। जीवन में कष्टों के बाद ही सच्चा सुख मिलता है भगवान का सेवक बन कर रहना चाहिए। कथा का व्यापार नहीं होना चाहिए। जिसने क्रोध को जीत लिया। संसार के प्रत्येक क्षेत्र में सफल हो सकता है।माता पिता की सेवा के बिना जीवन का कल्याण नहीं होता है। युवा वर्ग श्रीमद्भागवत को प्रेरणा मानकर माता पिता की सेवा के संस्कार को जीवन में आत्मसात करें तो उनके जीवन का कल्याण हो सकता है। श्रीमद्भागवत श्रवण करने से अनेक कष्टों का संहार होता है। मन को शांति मिलती है। तनाव दूर होता है। महाराज श्री विभिन्न विषयों के महत्व पर वर्तमान परिपेक्ष में प्रकाश डाला।

एफडीपी वाड़ी विकास परियोजना के तहत वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण से ग्रामीणों को नई दिशा मिली

मुवाला में दिया वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण, 88 वाड़ी प्रतिभागियों ने लिया भाग

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। एचडीएफसी बैंक परिवर्तन और बाएफ लाइव्लीहुड मध्यप्रदेश के संयुक्त प्रयास से ग्राम पंचायत मुवाला में बैंक स्टाफ सहभागिता के तहत वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम एफडीपी वाडी विकास परियोजना के अंतर्गत आयोजित किया गया जो गरोठ और सीतामऊक्षेत्र के 50 गांवों में 1200 परिवारों की आजीविका उन्नयन की दिशा में गत तीन वर्षों र्से संचालित है।

ग्रामीण सशक्तिकरण का उद्देश्यररू इस वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीणों को वित्तीय प्रबंधन, बैंकिंग प्रणाली, डिजिटल लेन-देन और शासकीय योजनाओं से जुड़ने के लिए प्रेरित करना था। शिविर में 85 वाडी प्रतिभागियों ने भाग लिया जिन्होंने बचत के महत्व और सरकारी योजनाओं के लाभ के बारे में जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम की मुख्य गतिविधियांर रू कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती और स्व. डॉ. मणिभाई देसाई की पूजा और दीप प्रज्वलन से हुआ। इस अवसर पर उप सरपंच बालेश्वर पाटीदार, एचडीएफसी बैंक सीतामऊ के प्रबंधक अविनाश गांधी, दिलीप सिंह, बाएफ लाइव्लीहुडके टीम लीडर आर.जी. गुप्ता समेत समस्त वाडी प्रतिभागी एवं कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। एचडीएफसी बैंक के शाखा प्रबंधक अविनाश गांधी ने वाडी परियोजना की उपलब्धियों और ग्रामीणों के जीवन में आए सकारात्मक बदलावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने किसान क्रेडिट कार्ड, छोटी बचत योजनाओं और बैंकिंग प्रक्रियाओं की जानकारी साझा की। साथ ही दिलीप सिंह ने सरकारी योजनाओं और उनमें मिलने वाली छूट के बारे में मार्गदर्शन किया। आर.जी. गुप्ता ने वाडी से प्राप्त होने वाली आमदनी एवं उसके वित्तीय प्रबंधन तथा प्रधानमंत्री लघु उद्यमी योजनाओं और सब्सिडी लाभ प्राप्त करने की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया। इसके अलावा, डिजिटल लेन-देन और ऑनलाइन भुगतान के महत्व पर चर्चा की गई, जो ग्रामीणों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलता है।

ग्रामीण विकास में सामूहिक प्रयास- कार्यक्रम की सफलता में एचडीएफसी बैंक के दिलीप सिंह, ग्राम पंचायत मुवाला के सचिव अशोक कुमार गेहलोत और बाएफ लाइव्लीहुडके सुरेश सिंह मेवाड़ा, रविंद्र पाटीदार, विजय धाकड़ और देवेन्द्र चौहान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ग्राम स्तर पर सुंदरलाल, ओमप्रकाश, कन्हैयालाल पाटीदार, मांगीलाल और अम्बालाल गायरी का योगदान भी सराहनीय रहा।

सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक कदम - प्रशिक्षण में प्रतिभागियों ने वित्तीय जागरूकता की इस पहल की सराहना की। एचडीएफसी बैंक के शाखा प्रबंधक गांधी ने प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद दिया और भविष्य में ऐसी गतिविधियों को समय-समय पर आयोजित करने हेतु टीम को प्रेरित किया। उप सरपंच द्वारा बताया गया कि यह आयोजन न केवल ग्रामीणों को वित्तीय ज्ञान प्रदान करने में सफल हुआ बल्कि आजीविका उन्नयन, डिजिटल जागरूकता, और सामुदायिक विकास की दिशा में उदाहरण प्रस्तुत करता है।

आचार्य श्री रामानुज जी के सानिध्य में होने वाली 4 जनवरी से श्रीराम कथा की तैयारियां आरम्भ

भगवान श्री तलाई वाले बालाजी, चिंताहरण गणपतिजी, पशुपतिनाथजी एवं बड़े बालाजी को भक्तों ने पत्रिका अर्पित कर दिया न्यौता

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। श्री हरिकथा आयोजन समिति के तत्वाधान में भगवान श्री पशुपतिनाथ की नगरी मन्दसौर में आगामी 4 से 12 जनवरी 25 तक आयोजित विराट श्रीराम कथा की आमंत्रण पत्रिका श्री तलाई वाले बालाजी, भगवान श्री द्विमुखी चिंताहरण गणपति, भगवान श्री पशुपतिनाथ एवं श्री बड़े बालाजी भगवान बस स्टैंड पर भक्तों ने अर्पित कर भगवान को श्रीराम कथा में पधारने का न्यौता दिया।श्री हरि कथा आयोजन समिति द्वारा 4 जनवरी से नयापुरा रोड स्थित बालाजी धाम रुद्राक्ष माहेश्वरी भवन के परिसर में आयोजित होने वाली श्री राम कथा में व्यास पीठ पर श्री राम कथा के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य श्री रामानुज जी कथा का अमृत पान करवाएंगे । कथा की तैयारीयो का श्री गणेश आज शनिवार को भगवान श्री तलाई वाले बालाजी के चरणों मे हरिकथा आयोजन समिति के अध्यक्ष नरेंद्र अग्रवाल, की अगुवाई में श्री राम कथा की आमंत्रण पत्रिका अर्पित कर किया गया।

इस अवसर पर श्री हरिकथा आयोजन समिति के सर्वश्री नंदकिशोर अग्रवाल ,कृष्ण कुमार चिचानी, सत्यनारायण छापरवाल सुरेश सोमानी, रमाशंकर शर्मा, राव विजय सिंह ,राजेंद्र चास्टा, मिलिंद जिलेवार, देवेंद्र पौराणिक, पत्रकार राहुल सोनी, लोकेश पालीवाल, कृष्णवल्लभ त्रिपाठी एडवोकेट, डॉ आशीष अग्रवाल, अनिल अग्रवाल ,राजेंद्र तिवारी, जगदीश सेठिया ,सुरेश पाठक, कृष्णकांत मोदी ,हेमंत अग्रवाल ,दीपक सोनी ,मनीष गोड, अरुण गोड, अजय तिवारी, प्रदीप भाटी, विवेक पालीवाल, संजय वर्मा ,राजू ओझा, दिलीप सेठिया, नरेंद्र त्रिवेदी सहित बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित थे। श्री तलाई वाले बालाजी मंदिर प्रांगण में भगवान बालाजी के चरणों में पत्रिका अर्पित करने के बाद समिति के अध्यक्ष नरेंद्र अग्रवाल ने उपस्थित भक्तों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज से श्री राम कथा के विराट आयोजन का श्री गणेश हो चुका है अब हम सबको आज से 12 जनवरी तक एक माह तक लगातार दिन रात एक करना होगी ताकि अधिक से अधिक धर्म प्रेमी जनता श्री राम कथा का लाभ ले सके। आपने कहा कि मंदसौर के इतिहास में पहली बार श्री राम कथा के माध्यम से समिति ने 21 कन्याओं के निशुल्क विवाह का जो लक्ष्य रखा है उसे लक्ष्य को भी हम सबको अधिक से अधिक प्रचार करके पूरा करना है ताकि आने वाली अक्षय तृतीया 30 अप्रैल को मंदसौर में हिंदू कन्याओं के निशुल्क विवाह का एक बड़ा आयोजन संपन्न हो सके । राम कथा के साथ-साथ हमें कन्या विवाह को भी प्रमुखता से प्रचारित प्रसारित करना है ताकि मंदसौर जिले ही नहीं अपितु विश्व के हर कोने में हमारी आवाज पहुंचे और जहां भी जरूरतमंद परिवार अक्षय तृतीया पर विवाह करने का सोच रहे हो वह परिवार मंदसौर में आयोजित होने वाले विवाह समारोह में सम्मिलित हो सके । आयोजन समिति के पदाधिकारीयो ने श्री तलाई वाले बालाजी भगवान, श्री द्विमुखी चिंताहरण गणपति जी , भगवान श्री पशुपतिनाथ मंदिर एवं बस स्टैंड बस स्टैंड से श्री बड़े बालाजी भगवान को श्री राम कथा की आमंत्रण पत्रिका अर्पित कर कथा में भगवान को पधारने का न्योता दिया।

श्रीराम कथा के कार्यालय का आज पूज्य संत श्री के कर कमलों से होगा उद्घाटन-श्री हरि कथा आयोजन समिति के तत्वाधान में 4 जनवरी से 12 जनवरी 25 तक आयोजित होने वाली श्री राम कथा के आयोजन को भव्यता प्रदान करने हेतु कथा आयोजन समिति के कार्यालय का शुभारंभ आज 15 दिसंबर रविवार को प्रात: 10 बजे सत्यम विहार कालोनी के गेट पर श्री चैतन्य आश्रम मेनपुरिया के पूज्य संत स्वामी श्री मणि महेश चेतन्य महाराज द्वारा किया जाएगा। इस आशय की जानकारी देते हुए श्री हरि कथा आयोजन समिति के अध्यक्ष नरेंद्र अग्रवाल , श्री ब्रजेश जोशी, श्री सत्यनारायण छापरवाल ,सुरेश सोमानी ने समस्त भक्तो से अनुरोध किया कि आज रविवार को प्रात: 10 अम्बा रिसोर्ट के पीछे सत्यम विहार कालोनी के गेट के समीप प्रदीप भाटी के निवास स्थान पर श्री हरिकथा आयोजन समिति के कार्यालय शुभारंभ में उपस्थित होकर श्रीराम कथा की तैयारियों में आप भी सहभागी बने।

टीबी से लड़ने के लिए जागरुक होना पड़ेगा

मंदसौर जिला प्रेस क्लब के प्रेस से मिलिए कार्यक्रम में जिला क्षय अधिकारी डा. द्विवेदी हुए पत्रकारों से रुबरु

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। टीबी के खिलाफ सरकार के चलाए जा रहे अभियान में सहभागिता कर आम लोगों को भी जागरुक होने की जरुरत है। टीबी की जांच कराने को लेकर लोग लापरवाही और संकोच करते हैं। यह एक बडी जागरुकता की कमी कहीं जा सकती है।

यह बात जिला क्षय अधिकारी डॉ आरके द्विवेदी ने कहीं। वह जिला प्रेस क्लब के तत्वावधान में प्रेस से मिलीए कार्यक्रम में प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत पत्रकारों से रुबरु थे। डॉ द्विवेदी ने बताया कि मंदसौर जिले को सरकार ने पायलेट प्रोजेक्ट वाले जिले में शामिल किया है। उन्होंने कहा कि टीबी किसी भी उम्र में हो सकती है। टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत सबसे ज्यादा जोर टीबी की जांच पर दिया जा रहा है। लेकिन इससे लोग कतराते हैं। बिना लक्षण के तो लोगों को जांच के लिए तैयार करना बहुत मुश्किल होता है। टीबी के मरीज के ठीक होने के बाद वापिस बीमारी लौटकर होने की भी संभावना होती है। इसलिए उन्हें समय समय पर जांच कराना चाहिए। इसके अलावा टीबी के मरीजों के संपर्क में रहने वाले उनके पजिन और अन्य लोगों को भी टीबी की जांच कराना चाहिए। हमारा टारगेट है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों की टीबी की जांच हो।ं मरीज की जांच से लेकर दवाईयां तक निशुल्क मिलती है। एचआईवी से ग्रसित लोगों में टीबी की संभावना बनी रहती है। उन्हें दवाईयां उपलब्ध कराई जा रही है। डॉ द्विवेदी ने बताया कि सर्वे में हर पांचवे व्यक्ति के शरीर में टीवी के किटाणु मिले हैं। इधर जांच कराने में पढे लिखे लोग भी कतराते हैं। जिसका परिणाम टीबी के खिलाफ चल रही जंग पर विपरित पड रहा है। समय पर जांच और उपचार मिल जाए तो टीबी को आसानी से हराया जा सकता है। डॉ द्विवेदी ने बताया कि टीबी के मरीजों को ठीक होने के बाद हर छह माह में जांच के लिए कहा जाता है। इसका कारण है कि टीबी पलटकर वापिस आने की संभावना बनी रहती है। पुराने मरीजों को भी जांच के लिए बुलाया जाता है। एक सप्ताह अगर टीबी की दवाईयां शुरु कर दी जाए तो मरीज दूसरे सामान्य व्यक्ति को प्रभावित नहीं कर सकता। डॉ द्विवेदी ने बताया कि जिले में पिछले साल बडी संख्या में टीबी की जांच हुई। जिसके बाद मंदसौर को इस मामले में गोल्ड मेडल भी मिला था। उन्होंने कहा कि कोरोना के बाद फेफडे कई लोगों के कमजोर हुए है। जिससे टीबी की रिस्क भी बढी है। जनवरी से लेकर अभी तक 2 हजार 600 लोगों का उपचार किया जा चुका है। मेपिंग में पांच से ज्यादा मरीज मिलने वाले गांवों में सर्वे कराकर लोगों की जांच भी कराई जा रही है। स्लेट पेंसिल कारखानों सहित टीबी रिस्क वाले क्षेत्रों में लोगों कीजांच कराने को लेकर अभियान भी चलाया गया है। पायलेट प्रोजेक्ट को लेकर डॉ आरके द्विवेदी ने कहा कि देशभर में 347 जिले इसमें शामिल हुए है। जिसमें मंदसौर शामिल है। इसका कारण है कि मंदसौर में जांच ज्यादा हुई है और मरीज कम मिले हैं। इसके अलावा मंदसौर जिले मेंडेट रेट छह प्रश होने के कारण मंदसौर को पायलेट प्रोजेक्ट के लिए चुना गया है। लगातार चल रही जांच और जागरुकता अभियान का परिणाम है कि टीबी पर काफी कंट्रोल किया जा चुका है। केस ढूंढकर उपचार किया जा रहा है। जिससे इस बीमारी की चेन टूट रही है। इस अवसर पर प्रेस क्लब अध्यक्ष पुष्पराजसिंह राणा, सचिव राहुल सोनी व कोषाध्यक्ष लोकेश पालीवाल भी मंचासीन थे। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती की पूजा अर्चना के साथ हुई। प्रारंभ में स्वागत भाषण प्रेस क्लब अध्यक्ष पुष्पराजसिंह राणा ने दिया। संचालन सचिव राहुल सोनी ने किया। आभार कोषाध्यक्ष लोकेश पालीवाल ने माना।

ग्रहों के राजा आज रात करेंगे वृश्चिक से धनु राशि में प्रवेश, एक माह के लिए विवाह, मुंडन पर लगेगा विराम

इंदौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। 15 दिसंबर को सूर्य के वृश्चिक से धनु राशि में प्रवेश करने के साथ ही धनुर्मास (खरमास) की शुरुआत हो जाएगी। इस समय के दौरान सूर्य के कमजोर होने के कारण मांगलिक कार्यों पर विराम लगेगा। इसके बाद 16 दिसंबर से वेंकटेश मंदिरों में धनुर्मास उत्सव की शुरुआत होगी, जिसमें विशेष पूजा और आयोजन होंगे। सूर्य का धनु राशि में प्रवेश भगवान विष्णु के प्रिय धनुर्मास की शुरुआत को चिह्नित करता है। इस माह का विशेष धार्मिक महत्व है।

धनुर्मास और मांगलिक कार्यों पर प्रभाव– धनुर्मास के दौरान सूर्य के कमजोर होने के कारण इस समय में विवाह, मुंडन और अन्य मांगलिक कार्यों को टाला जाता है। यह समय भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना के लिए बहुत खास होता है। इस अवधि में विशेष रूप से तिरुपवाई स्त्रोत पाठ, गोदाजी अर्चना और गुरु परम्परा पाठ के आयोजन किए जाते हैं। इस दौरान 11 जनवरी को गोदा-रंगनाथ विवाह उत्सव का आयोजन भी होगा।

धनुर्मास उत्सव के प्रमुख आयोजन, वेंकटेश मंदिरों में धनुर्मास उत्सव– 16 दिसंबर से रामानुज संप्रदाय के वेंकटेश मंदिरों में धनुर्मास उत्सव की शुरुआत होगी। इस उत्सव के दौरान प्रतिदिन तिरुपवाई स्त्रोत पाठ, गोदाजी अर्चना, गुरु परम्परा पाठ और भजन-कीर्तन होंगे। 27वें दिन यानी 11 जनवरी को गोदा-रंगनाथ विवाह उत्सव मनाया जाएगा।

तिरुपति बालाजी वेंकटेश देवस्थान में विशेष पूजा– गुमाश्ता नगर स्थित तिरुपति बालाजी वेंकटेश देवस्थान में भी इस दौरान विशेष धार्मिक आयोजन होंगे। ट्रस्टी पुरुषोत्तम पसारी और रामस्वरूप मूंदडा ने बताया कि यहां प्रतिदिन मनोहारी श्रृंगार, तिरुपवाई स्त्रोत पाठ, गोदा अर्चना और गुरु परम्परा पाठ किया जाएगा। इसके साथ ही श्रद्धालुओं को खिरान प्रसाद भी वितरित किया जाएगा। 11 जनवरी को गोदा-रंगनाथ विवाह उत्सव होगा।

लक्ष्मी-वेंकटेश देवस्थान में कुमकुम अर्चना– गुमाश्ता नगर स्थित लक्ष्मी-वेंकटेश देवस्थान में स्वामी विष्णुप्रपन्नाचार्य के सान्निध्य में उत्सव होगा। यहां सुबह वेंकटरमणा गोविंदा श्रीनिवास गोविंदा नाम-जप और परिक्रमा होगी। उसके बाद कुमकुम अर्चना और रात में महाआरती का आयोजन होगा।

रामानुजकोट मंदिर में श्रीतिरुपावै पाठ– यशवंतगंज स्थित रामानुजकोट मंदिर में भी धनुर्मास महोत्सव मनाया जाएगा। इस अवसर पर गादीस्थ रंगाचार्य महाराज के सान्निध्य में प्रतिदिन सुबह स्तोत्र पाठ और गोदादेवी की रचित श्रीतिरुपावै की गाथाओं का पाठ किया जाएगा।

नपा द्वारा वार्ड स्तर पर लगाये जा रहे है शिविर

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का क्रियान्वयन दिनांक 11 दिसम्बर से 26 जनवरी 2025 तक निकाय मंदसौर के वार्ड स्तर पर शिविर लगाकर किया जा रहा है। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के शिविर स्थल पर केंद्र एवं राज्य सरकार की चिन्हित हितग्राही मूलक योजनाओं एवं सेवाओं का लाभ प्रदाय किया जा रहा है। नगर पालिका परिषद् मंदसौर द्वारा प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना अंतर्गत प्रथम चरण में 10000 रूपये का ऋण सिक्योरिटी फ्री बैंक के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रथम चरण के ऋण के पूर्ण भुगतान पश्चात बैंक द्वारा 20000 रूपये का ऋण एवं इसके पश्चात 50000 रूपये का ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। योजना में लाभ लेने हेतु नगर पालिका परिषद् मंदसौर की डे-एन.यू.एल.एम. शाखा में संपर्क कर पंजीयन करा कर योजना का लाभ प्राप्त कर सकते है।

गाय को नुकसान पहुंचाने पर पीटा

पिपलियामंडी, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मारपीट के मामले में पुलिस ने केस दर्ज किया। रायसिंह पिपलिया निवासी कमलेश मेघवाल ने नाहरगढ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि श्यामलाल पिता रामलाल मेघवाल मुझसे बोला कि तेरी गाय मेरे खेत में नुकसान कर रही है, गाली-गलौज कर मारपीट की व पत्थर से मारी, जिससे गर्दन, हाथ, कलाई व पैर पर चोंट आई। पुलिस ने आरोपी पर प्रकरण दर्ज किया।

ट्राली खरीदकर रुपए नहीं... पेज एक से जारी

लिखा-पढी राहुल पिता भारतलाल डांगी निवासी गरनई के सामने नाहरगढ में उसकी कृषि दवाई की दुकान पर सादे कागज पर हुई थी, जिस पर मेरे, फय्युम और गवाह राहुल डांगी के हस्ताक्षर हैं। मैंने उसी दिन राहुल के सामने फय्युम उर्फ चिम्पी को ट्राली सुपुर्द कर दी थी। ट्राली सौदे के फय्युम उर्फ चिम्पी ने दिनांक 27 अक्टूबर 2024 को 9500 रूपये फोन पे के माध्यम से तीन बार किस्तों में मुझे आनलाईन ट्रांसफर किये थे व बोला था कि मैं एक दो दिन में 10,000/-रूपये दे दूंगा, बाकी का पेमेंट 2 नवम्बर 2024 को देने की बोला था। 30 अक्टूबर 2024 को ट्राली के बाकी के रूपये के लिये फय्युम को फोन कर बोला तो उसने मुझे बाकी के रूपये देने से मना कर दिया ओर बोला कि मैंने तुम्हारे ट्राली के सारे पैसे गवाह के सामने दे दिये है, अब तुम मुझसे कोई पैसे नही मांगता हैं। फय्युम उर्फ चिम्पी ने मेरे से 1,31000/- रूपये कीमत की ट्राली (ट्रैक्टर की) खरीदकर सौदे अनुसार अभी तक मात्र 9500/- रूपये दिये और बाकी के रूपये देने की बोलकर मेरे साथ अमानत में खयानत की हैं।

महिमा धाकड़ का राष्ट्रीय बेसबॉल प्रतियोगिता में चयन

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। श्री सॉई पब्लिक स्कूल दलौदा के अध्यनरत बालिका मिनी वर्ग में कक्षा 8वीं की छात्रा महिमा धाकड पिता प्रदीप धाकड गांव फतेहगढ का 68वी राष्ट्रीय शालेय बालक -बालिका मिनी बेसबॉल प्रतियोगिता 19 से 22 दिसंबर तक बिलासपुर (छत्तीसगढ) में आयोजित की जाएगी, इसके पूर्व 12 से 16 दिसंबर तक प्री-नेशनल कैम्प छतरपुर में किया जा रहा है।

महिमा धाकड बिलासपुर (छत्तीसगढ) में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय मिनी बेसबॉल प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश टीम का प्रतिनिधित्व करेगी, खिलाड़ियों के चयन होने पर संस्था संचालक मोहसिन अख्तर, सहायक संस्था संचालक नबील अख्तर एवं खेल प्रशिक्षक दिनेश धाकड, अभिषेक सेठिया, सपना धाकड, जयेश माली, आरती चंद्रावत, एवं समस्त विद्यालय परिवार ने चयनित खिलाडीयों एवं उनके परिवार जनों को शुभकामनाएं प्रेषित की और खिलाडियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। यह जानकारी विद्यालय बेसबॉल कोच कु. आरती चन्द्रावत दी।

कश ट्रॉफी ऑल इंडिया फुटबॉल टूर्नामेंट 24 से

पूरे भारतवर्ष से 12 जानी-मानी फुटबॉल टीमें लेंगी हिस्सा, तैयारियां हुई शुरू

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। आशुतोष भगवान पशुपतिनाथ की पावन धरा पर मंदसौर नगर के प्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति और खेलप्रेमी स्व. श्री विनोद गर्ग (भाईसाहब) के द्वारा नगर के दिवंगत फुटबॉल खिलाड़ियों स्व. जितेंद्र सिंह मसराम और स्व. गौरव की स्मृति में शुरू किया गया कश ट्रॉफी ऑल इंडिया फुटबॉल टूर्नामेंट इस वर्ष भी दिसंबर माह में 24 से 29 दिसम्बर तक चंबल फुटबॉल क्लब द्वारा आयोजित किया जाएगा। यह आयोजन शासकीय पी. जी. कॉलेज मंदसौर पर आयोजित किया जाएगा।

इस टूर्नामेंट के आयोजन के लिए चंबल फुटबॉल क्लब की बैठक में यह फैसला लिया गया। क्लब सचिव श्री ईश्वर सिंह चौहान ने बताया कि इस ऑल इंडिया फुटबॉल टूर्नामेंट में पूरे भारत से जानी मानी फुटबॉल टीमें जिनमें पिछले साल की विजेता पंजाब पुलिस और उपविजेता तमिलनाडु पुलिस के अलावा जम्मू कश्मीर पुलिस, हिमाचल प्रदेश, सीआरपीएफ जालंधर, राजस्थान पुलिस, बैंक ऑफ बड़ौदा मुंबई, नारायणपुर छत्तीसगढ़, करनी क्लब बीकानेर, मदन महाराज भोपाल, मंदसौर, एन एफ ए नीमच जैसी टीमें भाग लेंगी और उनके खिलाडी अपने खेल कौशल का प्रदर्शन करेंगे। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए चंबल क्लब ने जमीनी स्तर पर तैयारियां शुरू कर दी है, जिसमें मैदान पर पानी का छिडकाव, मैदान का समतलीकरण, टीमों को निमंत्रण, उनके आवास, भोजन, दर्शकों की सुविधा के लिए पूरे मैदान पर दर्शक दीर्घा का प्रबंध, खिलाडियों की सुरक्षा के लिए पूरे फुटबॉल मैदान पर सुरक्षा जाली का प्रबंध आदि मुख्य है।

बैठक में क्लब अध्यक्ष श्री डॉ. भानु प्रताप सिंह सिसौदिया, सचिव श्री ईश्वर सिंह चौहान, टूर्नामेंट संयोजक श्री विपिन शर्मा, मंदसौर फुटबॉल संघ अध्यक्ष श्री बाबू गुर्जर, क्लब कोषाध्यक्ष सुरेंद्र प्रताप सिंह, सहसचिव मुजम्मिल काजी, दीपक शर्मा, अक्षय उपाध्याय, कमल कंडारे, अंशुल शर्मा, गगन विजयवर्गीय, दक्ष गौर, अक्षय राज सिंह आदि सदस्यगण उपस्थित थे।

जमुनिया कला में मुख्यमंत्री जन कल्याण पर्व के तहत आयुष स्वास्थ्य शिविर सपन्न

नीमच, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान के तहत कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा के मार्गदर्शन में जिला आयुष अधिकारी श्री आशीष बोरना के नेतृत्व में आयुष्मान आरोग्य मंदिर जमुनिया कला में शनिवार को 'महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी 'आयुष सेवाएं थीम पर निशुल्क आयुर्वेद स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया शिविर में संधि बात ,वात रोग, अरुचि ,अग्नि मान , विबंध, उदर रोग ,श्वास, कास,हृदय रोग, उच्च रक्तचाप ,मधुमेह, रक्ताल्पता एवं अन्य बीमारियों का निशुल्क परामर्श देकर आवश्यक ओषधियां वितरित की गई साथ ही शिविर में आई हुई महिलाओं को महिलाओं में होने वाले रोगों जैसे एनीमिया, स्तन कैंसर, गर्भाशय कैंसर से संबंधित जानकारी भी दी गई। शिविर में आए हुए रोगियों का बी पी, शुगर, हीमोग्लोबिन आदि की नैदानिक जांच की गई। महिला स्वास्थ्य से संबंधित आवश्यक परामर्श के साथ साथ योगाभ्यास कराकर स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने की आवश्यक सलाह भी दी गई। शिविर में डा पंकज कुमार पाटीदार , डॉ विमला पाटीदार ,हरीश दास बैरागी, भावना बैरागी, यतेंद्र राजावत, हेमंत व्यास ,आनंद शर्मा ,श्वेता जोशी आदि आयुष स्टाफ द्वारा सेवाएं दी गई। आयोजित शिविर में कुल 107 रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ लिया।

लेन-देन में पीटा, दो पर प्रकरण दर्ज

पिपलियामंडी, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। लेन-देन के मामले में मारपीट के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों पर केस दर्ज किया। गांव कचनारा में होटल चलाने वाले परमानंद धाकड ने नाहरगढ थाने पर रिपोर्ट दर्ज कराया कि धारासिंह पिता राधेश्याम बागरी व मांगीलाल बागरी चाय पीकर जाने लगे, पुराने रुपए मांगे तो गाली-गलौज कर मारपीट की। पुलिस ने दोनों आरोपियों पर केस दर्ज किया।

कुल्हाड़ी से हमला, चार पर मामला दर्ज

पिपलियामंडी, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। जमीन विवाद में मारपीट पर चार आरोपियों पर केस दर्ज किया। संजीत में जमीन विवाद में मुबारिक, मोईन, मोहसीन व मुस्तका बी ने मिलकर रुकसाना, बबलू पर कुल्हाडी व लकडी से जानलेवा हमला किया। पुलिस ने चारों आरोपियों पर केस दर्ज किया।

उठावना एवं शोक निवारण

मेरे लघुभ्राता, साहेबलाल पामेचा की धर्मसहायिका, समरथमल की भाभीजी, अजीत के काकीसा, चि. कमल, दर्शन, निखिलेश की बडी मम्मी, शौर्य, जय, दक्ष, मिहिका की दादीजी, ममता, मुक्ता की माताजी एवं योगेन्द्र कटारिया की बहिन श्रीमती प्रीति पामेचा का स्वर्गारोहण दिनांक 14 दिसम्बर 2024 को हो गया है। जिनका संयुक्त उठावना दिनांक 16/12/2024 सोमवार को प्रात: 10.30 बजे गोरनिया व शोक निवारण प्रात: 11 बजे जैन धर्मशाला शिक्षक कॉलोनी, पिपलियामंडी पर रखा गया है।

❊❊❊ शोकाकुल ❊❊❊
तेजमल, साहेबलाल, समरथमल पामेचा, पिपलियामंडी
योगेन्द्र कटारिया, सुवासरा, मोबा. 9977953067, फोन 07424-241131

बुजुर्गों के आशीर्वाद ही ईश्वर की प्राप्ति हैं-पं. दशरथभाई जी

मंदसौर, 14 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस। सेवानिवृत्त एवं पेंशनर नागरिक महासंघ जिला मन्दसौर के जिलाध्यक्ष अशोक रामावत का जन्मदिवस पं दीनदयाल उपाध्याय वृद्ध जन सेवा केंद्र (डे केयर सेंटर) मन्दसौर पर मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मालव के प्रसिद्ध भागवताचार्य पं दशरथ भाईजी थे। अध्यक्षता डे केयर सेंटर के मुख्य व्यवस्थापक डॉ. देवेन्द्र पुराणिक ने की। इस दौरान महासंघ के परामर्शदाता श्रवण कुमार त्रिपाठी व जिला उपाध्यक्ष शिक्षाविद् रमेशचन्द्र चन्द्रे भी मंचासीन थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि पं दशरथ भाईजी ने कहा कि बुजुर्गों कें आशीर्वाद से साक्षात ईश्वर की प्राप्ति होती है। वरिष्ठ व्यक्ति अपने जीवन भर के अनुभव से ओतप्रोत होता है। उनकी सेवा करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करना ईश्वर की सबसे बडी भक्ति है। हमें अपने बडों का बुजुर्गों कीं सेवा करनी चाहिए। आपने कहा कि मैं आज आप सभी वरिष्ठजनों के बीच उपस्थित होकर अभिभूत हूं। शिक्षाविद श्री रमेशचन्द्र चन्द्रे ने अपने उद्बोधन में कहा कि वरिष्ठजन अपने अनुभवों को साझा कर समाज को समर्पित करें। पेंशनर संघ के सदस्य प्रतिभा सम्पन्न हैं। सभी पेंशनर साथी युवा पीढ्ी को मार्गदर्शन करें। परामर्शदाता श्रवण कुमार त्रिपाठी ने कहा कि समय के साथ परिवार हो या संगठन हो अपना उत्तराधिकारी अपनी देखरेख में ही तैयार करना लेना चाहिए ताकि परिवार व संगठन मजबूती से निरंतर चलता रहे। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ देवेन्द्र पुराणिक ने कहा कि आज हमारे जिलाध्यक्ष का जन्मदिवस हम सब मना रहे हैं,आप सभी अपना जन्मदिन परिवार सहित डे केयर सेंटर में मनाए। वरिष्ठजनों के मनोरंजनार्थ डे केयर सेंटर पर वाचनालय, शतरंज, टेबल टेनिस, केरम बोट आदि अनेक गतिविधियां चल रही है। वरिष्ठजन इसका लाभ ले। जिला अध्यक्ष अशोक रामावत ने अपने जन्मदिवस पर उपस्थित सभी साथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों व सभी वरिष्ठजनों द्वारा मां सरस्वती व भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। संगठन गीत डे केयर सेंटर सचिव राजेंद्र पोरवाल ने, प्रस्तुत सरस्वती वंदना नगर सचिव अशोक नागदा ने व बधाई गीत प्रकाश जैन ने प्रस्तुत किया। पिपलियामण्डी इकाई अध्यक्ष पंकज शर्मा ने अपनी स्वरचित कविता एवं गीत तथा शहर इकाई अध्यक्ष दिनेश खत्री, जनकपुरा इकाई संगठन सचिव कैलाश उपाध्याय ने भक्तिमय भजन प्रस्तुत किया,।

वरिष्ठजन अपने आप को समाज सेवा में समर्पित करें-चन्द्रे

नगर इकाई के उपाध्यक्ष प्रभुदयाल शर्मा, खानपुरा इकाई अध्यक्ष सतीश शर्मा, जनता कालोनी इकाई अध्यक्ष देवकीनंदन पालरिया, अभिनंदन इकाई अध्यक्ष रमेशचन्द्र सोनी, गीताभवन इकाई अध्यक्ष गोपाल दास रामावत, रेल्वे स्टेशन पूर्वी भाग उपाध्यक्ष गोवर्धनदास बैरागी, रामटेकरी इकाई अध्यक्ष अशोक पंवार, जिला कार्यकारिणी सदस्य अजीजुल्लाहखान खालिद, जिला सह सचिव अनिल श्रोत्रिय, सुवासरा इकाई सचिव अर्जुन सिंह मेहर, पिपलिया मण्डी इकाई उपाध्यक्ष हरिसिंह यादव, सचिव अमृतलाल जैन, के सी टेलर साहब, संजीत इकाई अध्यक्ष पारसमल जैन, भारतीय मजदूर संघ मन्दसौर -नीमच विभाग प्रमुख गोपाल जामलिया, जिला अध्यक्ष राकेश शर्मा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका संघ जिला अध्यक्ष श्रीमती गायत्री बैरागी, नल-जल संचालक कर्मचारी महासंघ प्रदेश अध्यक्ष जानकीलाल धाकड, पेंशनर महासंघ के वरिष्ठ सदस्य इन्जिनियर बी एस सिसौदिया, आशा उषा कार्यकर्ता सुपरवाइजर कर्मचारी संघ प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती भारती सोलंकी आदि ने जिला अध्यक्ष अशोकरामावत को जन्मदिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं दी,। पं दशरथ भाई जी ने श्री रामावत को श्री रामचरितमानस की प्रति भेंट की तथा संगठन द्वारा एक मानपत्र भी दिया गया, जिसका वाचन डे केयर सेंटर के सह सचिव अम्बालाल चन्द्रावत ने किया। श्री रामावत को शाल श्रीफल व पुष्पमाला पहनाकर सम्मानित किया गया। स्वस्तिवाचन व महामृत्युंजय मंत्र तथा गायत्री मंत्र का सामूहिक वाचन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न संगठनों व संस्थाओं के प्रतिनिधिगण, श्यामलाल सोनी, धर्मेंद्र शर्मा टीकमचंद सांखला, रमेश चंद्र भुरिया, ओमप्रकाश व्यास, अभय कुमार भटेवरा, राजेन्द्र शर्मा, ललित पाल, दिनेश बघेरवाल, सुधीर पण्ड्या, विष्णुलाल भदानियां, परमेश्वर बैरागी, राजेश दावरे, दिनेश पालीवाल, लक्ष्मीनारायण सोनी, पुरूषोत्तम गोयल, टीकमचंद सांखला, रमेश चंद्र भुरिया, महावीर रघुवंशी, आरिफ हुसैन, सालीगराम डिया, भंवरलाल भण्डारी, सुरेश राउत्त, श्रीमती संगीता कुंवर, हिम्मत सिंह मेहता, मदनमोहन पाण्डेय, एस के जोशी, जगम्बिका प्रसाद दूबे आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन जिला सचिव चन्द्रकान्त शर्मा ने किया। आभार जिला कार्यकारिणी सदस्य अजीजुल्लाह खान खालिद ने माना। यह जानकारी प्रचार सचिव भूपेश पाण्डेय ने दी।

श्री मोदी जी

श्री यादव जी

श्री देवड़ा जी

सुश्री भुरिया जी

सहकारिता के माध्यम से मंदसौर जिले में एक वर्ष की उपलब्धियां...

❊ **प्रधानमंत्री जनऔषधि केन्द्रों का शुभारंभ:-**
किफायती मूल्य पर जेनेरिक दवाईयां उपलब्ध कराने हेतु जिले की 05 सहकारी संस्थाओं में प्रधानमंत्री जनऔषधि केन्द्रो का शुभारंभ।

❊ **कॉमन सर्विस सेंटर का शुभारंभ:-**
भारत सरकार एवं म.प्र. सरकार की समस्त ऑनलाईन सेवाऐं एक ही केन्द्र से प्राप्त हो सके इस हेतु जिले की समस्त 104 सहकारी संस्थाओं में कॉमन सर्विस सेंटर का शुभारंभ।

❊ **सोयाबीन उपार्जन:-**
मंदसौर जिले में 29 उपार्जन केन्द्रों पर 10378 किसानों से रूपये 4892 प्रति क्विंटल दर पर 21548 मेट्रीक टन सोयाबीन का उपार्जन।

❊ **कृषकों को अल्पावधि ऋण वितरण:-**
❊ मंदसौर जिले में 169764 किसानों को 0 जिरों प्रतिशत ब्याज दर पर राशि रूपये 1098.23 करोड का ऋण वितरण।
❊ दुग्ध उत्पादन करने वाले 9927 किसानों को 0 जिरों प्रतिशत ब्याज दर पर राशि रूपये 37.22 करोड का ऋण वितरण।
❊ मत्स्य पालन करने वाले 2713 हितग्राहीयों को 0 जिरों प्रतिशत ब्याज दर पर राशि रूपये 7.10 करोड का ऋण वितरण।

म.प्र. सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने पर सहकारिता के माध्यम से जन कल्याण हेतु उपलब्ध करवाई जा रही सेवाओं के लाभ हेतु नजदीकी सहकारी संस्थाओं से संपर्क कर लाभ प्राप्त करें।

सौजन्य से:- जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित, मंदसौर

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in